हिंदी गृह पत्रिका

छठवां अंक
सितंबर, 2022

आईएसओ 9001:2015 पत्तन
AN ISO 9001-2015 PORT

गोंय पोर्ट दर्पण

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण

हेडलैण्ड सडा- गोवा

मुरगांव पत्तन में आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों की झलकियां

मुरगांव पत्तन में आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों की झलकियां

गोंय पोर्ट दर्पण

■ **संरक्षक**

डॉ. वेंकट रमणा अक्कराजु, अध्यक्ष

मार्गदर्शक

श्री. गुरुप्रसाद राय,उपाध्यक्ष

कप्तान मनोज जोशी, उप संरक्षक

श्री. एस. पी. मोहन कुमार, सचिव(प्रभारी)

■ **संपादक**

श्रीमती नीलम केंकरे, हिंदी अधिकारी

■ **सहायक संपादक**

श्रीमती निलिमा स्वार, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

श्रीमती रोशन कोमरपंत, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

■ **टंकण सहयोग**

श्री. शिवकुमार कलबुर्गी,वरिष्ठ लिपिक

विषय सूची

1) संदेश 4-7
2) संपादकीय 8
3) मुरगांव पत्तन प्राधिकरण में ऑनलाइन हिंदी सप्ताह समारोह, 2021 का आयोजन 9-11
4) राजभाषा और राष्ट्रभाषा में अंतर 12
5) कान की आत्मकथा 13
6) मुरगांव पत्तन में अंतरराष्ट्रीय और देशी क्रूज टर्मिनलों, रो-पैक्स, फेरी और अन्य संबद्ध सुविधाओं का विकास। 14
7) मुरगांव पत्तन में नवीकरणीय ऊर्जा 15
8) मुरगांव पत्तन के बायना स्थित रेलवे यार्ड में अप रैम्प का निर्माण 16
9) धन्य है वह भारत देश की भारतीय नारी................16
10) हिंदी मेरी मातृभाषा है 17
11) विवशता 18
12) अपनी ग़लती को स्वीकार करें।.......................18
13) मेरे सपनों का भारत 19
14) मन की बात.......................................19
15) मैं कन्या हूँ.......................................20
16) जिंदगी 21
17) यादें..22
18) सहजन का पेड 23
19) श्रावण मास 24
20) युद्ध 25
21) चुनौती 26
22) बूढ़ी माँ 26
23) पत्तन की झलकियां 27-42

पत्रिका में अभिव्यक्त विचारों से पत्तन प्राधिकरण का सहमत होना अनिवार्य नहीं है, यह लेखकों के निजी विचार हैं।

MPA
मुरगांव पत्तन प्राधिकरण
आईएसओ 9001:2015 पत्तन
AN ISO 9001-2015 PORT

संदेश

प्रिय साथियों,

मुरगांव पत्तन की वार्षिक हिंदी पत्रिका **'गोंय पोर्ट दर्पण'** के प्रकाशन के अवसर पर मुझे आप सभी को संबोधित करते हुए अपार प्रसन्नता हो रही है।

देश को एक सूत्र में पिरोने के लिए भाषा का महत्वपूर्ण योगदान होता है और संपूर्ण भारतवर्ष में हिंदी भाषा ने राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक एकता बनाए रखने में सशक्त भूमिका अदा की है। आज पूरे देश में हिंदी के प्रति एक सकारात्मक माहौल बनता दिखाई दे रहा है। माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी में दिए गए संबोधन अपने आप में विलक्षण है तथा राजभाषा हिंदी को गति देने में उनकी सार्थक और अहम भूमिका है।

लक्ष्य और सफलता हमेशा सहयोग भावना और कड़ी मेहनत से ही प्राप्त की जा सकती है। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु हम सभी के सम्मिलित प्रयास आवश्यक है। अत: इस पत्रिका के माध्यम से मैं आप सभी से अपील करता हूँ कि राजभाषा की प्रगति को अपना संवैधानिक उत्तरदायित्व मानते हुए अपना दैनिक कार्यालयीन कार्य राजभाषा के माध्यम से निष्पादित करने के लिए हमेशा प्रयासरत रहें, क्योंकि राजभाषा का प्रयोग मात्र राजभाषा की प्रगति को ही नहीं बल्कि यह राष्ट्र की प्रगति को भी दर्शाता है।

'गोंय पोर्ट दर्पण' के श्रेष्ठ संपादन एवं सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को मंगलकामनाएं।

जय हिंद, जय हिंदी।

(डॉ. वेंकट रमणा अक्कराजु)
अध्यक्ष

संदेश

'गोंय पोर्ट दर्पण' ने अपने सफ़र में आज एक और कदम आगे बढ़ा लिया है और यह निश्चित तौर पर एक ऐसी उपलब्धि है जिससे न केवल राजभाषा के प्रयोग एवं प्रचार प्रसार को गति मिलती है, अपितु हमारे पतन कर्मचारियों की भावनाओं और अनुभवों को वाणी भी मिलती है।

कार्यालयों में राजभाषा हिंदी कार्यान्वयन के बारे में मेरा विचार है कि हमें हिंदी के सरल रुप को अपनाकर बिना किसी हिचकिचाहट से अधिकाधिक कार्य हिंदी में करने हेतु प्राथमिकता देनी चाहिए ।

भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन तथा राजभाषा हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहन देने की दिशा में हिंदी पत्रिका का नियमित प्रकाशन एक महत्वपूर्ण कदम है। यह पत्रिका पूर्ण रूप से अपने उद्देश्यों को प्राप्त करते हुए नईं उंचाईयों को छूए, इसी कामना के साथ पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

(गुरूप्रसाद राय)
उपाध्यक्ष

संदेश

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण

आईएसओ 9001:2015 पत्तन
AN ISO 9001-2015 PORT

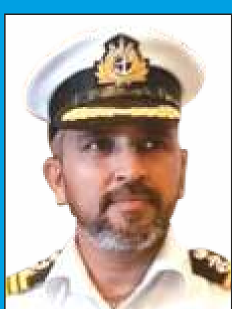

पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन भाषा की प्रगति का एक सशक्त माध्यम होता है। हमारे देश की राजभाषा हिंदी है, जो अपने उद्भव काल से ही सार्वदेशिक भाषा रही है। हिंदी राजभाषा के साथ –साथ राष्ट्रीय एकता का भी प्रतीक है। यह एक भाषा ही नहीं बल्कि भारत के गौरवशाली परंपरा का भी प्रतीक है व हमारी संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है।

अपनी भाषा में लेखन करने से विचारों व कार्यों की अभिव्यक्ति सरल, सहज व स्वाभाविक होती है। ऐसे में पत्तन की गतिविधियों को जनसामान्य तक **पहुंचाने** के उद्देश्य से हमारी वार्षिक हिंदी पत्रिका **'गोंय पोर्ट दर्पण'** का प्रकाशन एक सार्थक प्रयास है।

हिंदी भाषा अपनी सरल शैली के कारण हमारी अभिव्यक्ति का एक अहम स्त्रोत है। हमारी वार्षिक हिंदी पत्रिका **'गोंय पोर्ट दर्पण'** हमारे अधिकारियों व कर्मचारियों तथा उनके परिवार के सदस्यों को अपनी अभिव्यक्ति द्वारा साहित्यिक अभिरुचि को साकार करने का एक उचित माध्यम प्रदान करती है।

मैं इस पत्रिका से जुड़े सभी सदस्यों को बधाई देता हूँ और पत्रिका के अविरत प्रकाशन की कामना करता हूँ ।

(कप्तान मनोज जोशी)
उप संरक्षक

संदेश

यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है कि पतन की वार्षिक हिंदी पत्रिका 'गोंय पोर्ट दर्पण' के मार्गदर्शक के रुप में मुझे लगातार इससे जुड़ने का शुभ अवसर प्राप्त हो रहा है। हिंदी हमारी राजभाषा है, इस नाते सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग हमारा संवैधानिक तथा नैतिक कर्तव्य है। वर्तमान समय में हिंदी पूरे देश में सर्वाधिक बोली एवं समझी जाने वाली भाषा है और आज न केवल कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग में वृद्धि हुई है बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी हिंदी को सहृदय अपनाया जा रहा है।

राजभाषा के प्रचार–प्रसार में गृह पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान होता है। यह हर्ष का विषय है कि मुरगांव पत्तन राजभाषा को सर्वमान्य रूप देने के लिए सदा प्रयासरत है और प्रति वर्ष अपनी वार्षिक हिंदी पत्रिका **'गोंय पोर्ट दर्पण'** का प्रकाशन करता है।

हिंदी पर्व के अवसर पर प्रकाशित की जाने वाली इस हिंदी पत्रिका **'गोंय पोर्ट दर्पण'** के छठवें अंक के लिए मैं पत्तन परिवार के सभी सदस्यों को बधाई देता हूँ।

मोहन कुमार

(एस. पी. मोहन कुमार)
सचिव (प्रभारी)

आईएसओ 9001:2015 पत्तन
AN ISO 9001-2015 PORT

संपादकीय

हमारा देश एक बहुभाषी देश है, जिसमें सर्वाधिक लोकप्रिय भाषा हिंदी भारत की सामाजिक और सांस्कृतिक एकता की पहचान कराती है। यह एक सरल भाषा है। हमारे देश के अधिकांश लोग हिंदी समझते व बोलते हैं। स्वतंत्रता के समय हिंदी स्वराज व स्वावलंबन की पहचान थी। हिंदी अपनी मौलिकता, सरलता व सुबोधता के कारण आज न सिर्फ संपूर्ण भारत में बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी प्रयोग में लाई जा रही है।

कार्यालयीन कार्य में हिंदी का प्रयोग करना तथा इसके प्रचार – प्रसार में अपना योगदान देना हमारा नैतिक एवं संवैधानिक कर्तव्य है। हमारा पत्तन अपनी अन्य गतिविधियों के साथ–साथ राजभाषा हिंदी की उन्नति और विकास के लिए भी निरंतर प्रयासरत है। पत्तन में किए जा रहे कार्यालयीन कार्यों में उच्च अधिकारियों द्वारा राजभाषा का प्रयोग अधीनस्थ कार्मिकों के लिए अनुकरणीय है । पत्तन में राजभाषा नियमों एवं आदेशों के अनुपालन हेतु प्रभावी जाँच बिंदु स्थापित किए गए है। मुझे पूरा विश्वास है कि सभी के सहयोग से राजभाषा के क्षेत्र में निष्ठापूर्वक प्रयत्नशील रहकर हम नई उपलब्धियों को प्राप्त कर सकेंगे।

'गोंय पोर्ट दर्पण' का यह छठवां अंक है और अब तक हिंदी दिवस के अवसर पर इसका नियमित प्रकाशन हो रहा है। पत्रिका को प्रकाशित करने का हमारा मुख्य उद्देश्य पत्तन गतिविधियों के बारे में सभी को अवगत कराना तथा कार्मिकों और उनके परिवार के सदस्यों की हिंदी में लेखन की प्रतिभा को प्रोत्साहित करना और उन्हें एक मंच प्रदान करना था और संभवतः हम इसमें सफल भी हुए है। आप सभी इसी तरह लेख, कविता, विभिन्न ज्ञानोपयोगी रचनाओं आदि को निरंतर प्रकाशन हेतु भेजते रहें। पत्रिका के बहुआयामी विकास के लिए आप सभी की सहभागिता आवश्यक है।

आशा है **'गोंय पोर्ट दर्पण'** का यह अंक भी आपको पसंद आएगा। पत्रिका आपको कैसे लगी, कृपया हमें अपनी प्रतिक्रिया से अवश्य अवगत कराएं।

(नीलम केंकरे)
हिंदी अधिकारी

मुरगांव पत्तन में ऑनलाइन हिंदी सप्ताह समारोह, 2021 का आयोजन

दि. 14 सितंबर, 1949 को हिंदी भाषा को हमारे देश की आधिकारिक भाषा अर्थात राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया और इसी ऐतिहासिक घटना के सम्मानार्थ प्रतिवर्ष दि. 14 सितंबर को संपूर्ण भारत में हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिवस की महत्ता को ध्यान में रखते हुए मुरगांव पत्तन प्राधिकरण ने अपने संवैधानिक दायित्वों के निर्वहन में प्रतिबद्ध रहते हुए तथा कोविड-19 महामारी के कारण उत्पन्न स्थितियों को मद्देनजर रखते हुए सूचना प्रौद्योगिकी के उपलब्ध साधनों का इस्तेमाल कर दिनांक 14 सितंबर, 2021 से दिनांक 22 सितंबर, 2021 तक ऑनलाइन हिंदी सप्ताह, 2021 का आयोजन किया, जिसमें पत्तन अधिकारियों व कर्मचारियों, तालुका स्तरीय स्कूली छात्रों और केंद्र सरकार/ सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों/बैंकों के कर्मचारियों के लिए ऑनलाइन प्रतियोगिताओं/गतिविधियों का आयोजन किया गया।

हिंदी सप्ताह समारोह का उद्घाटन कार्यक्रम दिनांक 14 सितंबर, 2021 को श्री. राजीव जलोटा, आईएएस, पूर्व अध्यक्ष, मुरगांव पत्तन की अध्यक्षता में ऑनलाईन संपन्न हुआ। श्री. गुरूप्रसाद राय, उपाध्यक्ष, मुरगांव पत्तन एवं सभी विभागाध्यक्ष बोर्ड रूम में उद्घाटन सत्र में उपस्थित रहे व अन्य कर्मचारियों ने गूगल मीट के माध्यम से ऑनलाइन सहभागिता की ।

इस अवसर पर अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, पत्तन के सभी विभागाध्यक्षों और अधिकारियों ने सामूहिक रूप से राजभाषा शपथ ली तथा श्री अमित शाह, माननीय गृह मंत्री तथा श्री. सर्बानंद सोणोवाल, माननीय मंत्री, पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग एवं आयुष मंत्री के इस अवसर पर संदेश पढे गए। श्री. राजीव जलोटा, आईएएस, ने इस अवसर पर शुभकामनाएं देते हुए सभी से आग्रह किया कि राजभाषा के रुप में संविधान निर्माताओं व्दारा हिंदी को दिए गए महत्व के पीछे के दृष्टीकोण को समझें और हिंदी में अपने दिन-प्रतिदिन के सरकारी कार्य स्वरुचि से करें। हिंदी में बोलने और लिखने के ईमानदार प्रयास करें। उन्होंने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से आग्रह किया कि कोविड-19 महामारी के कारण उत्पन्न वर्तमान स्थितियों को मद्देनजर रखते हुए विशिष्ट रूप से सूचना प्रौद्योगिकी के उपलब्ध साधनों के माध्यम से नियोजित इन गतिविधियों में सहभाग लेते हुए अपना सक्रिय योगदान दे। दिनांक 14.09.2021 को हिंदी दिवस के अवसर पर अध्यक्ष, मुरगांव पत्तन श्री. राजीव जलोटा, आईएएस के हिंदी दिवस संदेश को पत्तन के कॉर्पोरेट वेबसाइट पर होस्ट किया गया।

हिंदी सप्ताह समारोह के भाग के रूप में, पत्तन अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए गूगल मीट के माध्यम से विभिन्न ऑनलाइन प्रतियोगिताओं, यथा सामान्य हिंदी प्रतियोगिता, शब्द वर्णन प्रतियोगिता, श्रुत लेखन प्रतियोगिता, ‘‘बात मेरे मन की’’ प्रतियोगिता, का आयोजन किया गया ।

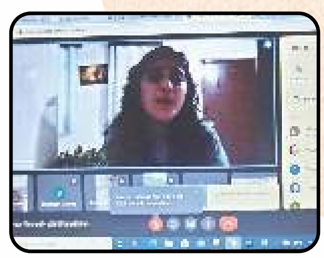

कार्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी के तहत एक विशेष हिंदी प्रचार-प्रसार गतिविधि के रूप में संजय स्कूल फॉर स्पेशल एजुकेशन, बोगदा, वास्को तथा न्यू डॉन आशादीप स्कूल, हेडलैण्ड सडा के स्पेशल बच्चों के लिए ऑनलाइन वेशभूषा प्रतियोगिता, जिसका विषय था भारत के महान नेता तथा चित्रकला प्रतियोगिता, जिसका विषय था ‘‘स्वतंत्र भारत’’, का आयोजन किया गया।

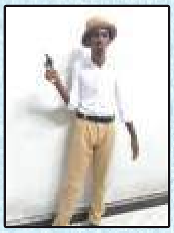

हिंदी सप्ताह के दौरान मुरगांव तालुका स्थित सेकंडरी व हायर सेकंडरी स्कूलों के छात्रों के लिए ऑनलाइन हिंदी निबंध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसके लिए विषय था, ''आज़ादी का अमृत महोत्सव और डिजिटल भारत –कोरोना काल के परिप्रेक्ष्य में''

इसी भांति नराकास द. गोवा के तत्वावधान में मुरगांव पत्तन द्वारा नराकास द. गोवा के अंतर्गत केंद्र सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों व बैंकों के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए काव्यांजलि नामक मौलिक हिंदी काव्य रचना प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

पत्तन के अधिकारियों और कर्मचारियों को कार्यालय में हिंदी प्रयोग हेतु विभिन्न इ–टूल्स के संबंध में प्रशिक्षण देने हेतु एक ''विशेष ऑनलाइन हिंदी कार्यशाला'' का आयोजन किया गया।

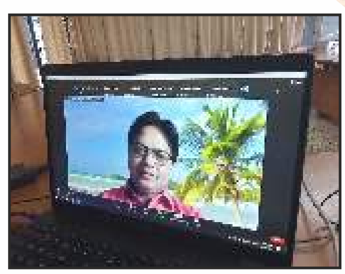

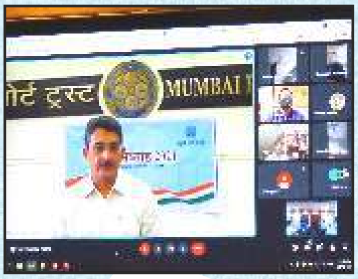

हिंदी सप्ताह, 2021 का समापन समारोह दि. 24.09.2021 को पूर्वाह्न 11:00 बजे गूगल मीट के माध्यम से ऑनलाइन संपन्न हुआ। ''हिंदी में कार्य करना हमारा संवैधानिक दायित्व है। हिंदी भाषा के प्रति प्रेम और निष्ठा दिखाते हुए अपने दैनिक कार्यों में अधिकाधिक हिंदी का प्रयोग करें''– श्री राजीव जलोटा, आईएएस, अध्यक्ष, मुरगांव पत्तन ने इस अवसर पर संबोधन किया। डॉ सुस्मिता भट्टाचार्य, उप निदेशक (कार्यान्वयन) राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

सचिव, सामान्य प्रशासन विभाग को राजभाषा के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य निष्पादन हेतु पतन की ''राजभाषा रोलिंग शील्ड 2020–21'' प्रदान की गई।

इस अवसर पर हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के पुरस्कारों की घोषणा की गई। 10वीं व 12वीं बोर्ड परीक्षाओं में हिंदी विषय में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले दीपविहार सेकेंडरी व हायर सेकेंडरी स्कूल के छात्रों को इस अवसर पर वर्चुअल से सम्मानित किया गया ।

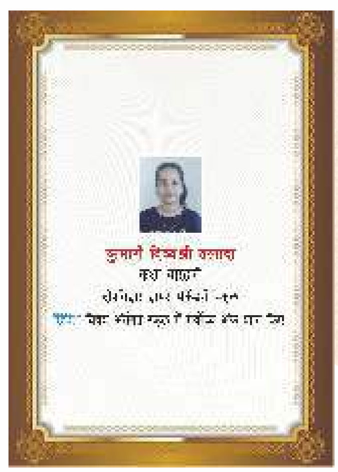

इस अवसर पर पत्तन की हिंदी पत्रिका गोंय पोर्ट दर्पण के पंचम अंक (ई– पत्रिका) का विमोचन किया गया।

कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान से किया गया। भारत की आजादी के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में, हिंदी सप्ताह समारोह, 2021 को ''आजादी का अमृत महोत्सव'' विषय पर केंद्रित किया गया था।

राजभाषा और राष्ट्रभाषा में अंतर

- राजभाषा एक संवैधानिक शब्द है, जबकि राष्ट्रभाषा स्वाभाविक रूप से सृजित शब्द। इस प्रकार राजभाषा प्रशासन की भाषा है तथा राष्ट्रभाषा जनता की भाषा।
- समस्त राष्ट्रीय तत्वों की अभिव्यक्ति राष्ट्रभाषा में होती है, जबकि केवल प्रशासनिक अभिव्यक्ति राजभाषा में होती है।
- राजभाषा की शब्दावली सीमित है, जबकि राष्ट्रभाषा की शब्दावली विस्तृत।
- राजभाषा, नियमों से बंधी होती है, जबकि राष्ट्रभाषा स्वतंत्र या मुक्त प्रकृति की होती है।
- राजभाषा में शब्दों का प्रवेश, निर्माण अथवा अनुकूलन (विशेषकर तकनीकी प्रकृति के शब्दों का) विद्वानों एवं विशेषज्ञों की समिति की राय से किया जाता है, जबकि राष्ट्रभाषा में शब्द समाज से आते हैं तथा प्रचलन के आधार पर रूढ़ होकर मान्यता प्राप्त करते हैं। इसके निर्माण में सभी का हाथ होता है।
- राजभाषा, हिंदी भाषा का प्रयोजन मूलक रूप है इसलिए तकनीकी सृजन है। जबकि राष्ट्रभाषा, हिंदी भाषा का स्वाभाविक तथा पारंपरिक रूप है।
- राजभाषा के प्रयोग का क्षेत्र सीमित होता है, जबकि राष्ट्रभाषा का क्षेत्र इतना व्यापक कि उसका व्यवहार अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी होता है।
- राजभाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग उत्तरोत्तर अंग्रेजी की जगह पर हो रहा है जबकि राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग स्वाभाविक स्वरूप से देश-विदेश सर्वत्र हो रहा है।

राजभाषा और राष्ट्रभाषा में अंतर

राष्ट्रभाषा	राजभाषा
राष्ट्रभाषा सरकारी व्यवस्था और प्रयास से नहीं, बल्कि आम जनता के प्रयोग से स्वत: विकसित होती है।	राजभाषा मुख्यत: सरकारी व्यवस्था और प्रयास पर निर्भर करती है । यह आम जनता के प्रयोग द्वारा स्वत: विकसित नहीं होती।
राष्ट्रभाषा का उपयोग आम जनता करती है।	राजभाषा का उपयोग मुख्यत: सरकारी कर्मचारी करते हैं।
आम जनता अपने सामान्य कामकाज के लिए राष्ट्रभाषा का उपयोग करती है। अत: इसमें बोलचाल के सामान्य प्रचलित शब्दों का उपयोग होता है।	सरकारी कर्मचारी शासकीय कार्य के लिए इसका उपयोग करते हैं। अत: इसमें शासकीय कार्य से संबंधित विशेष शब्दों का उपयोग अधिक होता है
आम जनता से संबंधित होने के कारण इसमें सरलता होती है।	सरकारी कामकाज से संबंधित होने के कारण इसमें विशिष्टता होती है।
राष्ट्रभाषा में बोलचाल के ऐसे शब्दों का भी उपयोग होता है जिनका एक से अधिक अर्थ हो सकता है।	राजभाषा में अर्थ की स्पष्टता बनाए रखना आवश्यक होता है। अत: शब्दों का सामान्यत: एक ही अर्थ होता है।
राष्ट्रभाषा के माध्यम से आमतौर पर सामान्य कार्य ही सम्पन्न किए जाते हैं।	राजभाषा के माध्यम से सामान्यत: विशिष्ट कार्य संपन्न किए जाते हैं, जिनमें तकनीकी और कानूनी कार्य भी शामिल हैं।
राष्ट्रभाषा में आमतौर पर शब्दों की एकरूपता बनाए रखना आवश्यक नहीं होता है। इसमें स्थानीय शब्दों के उपयोग की पूरी छूट होती है। अत: राष्ट्रभाषा की कई शैलियाँ विकसित हो जाती हैं, जैसे- बम्बईया हिंदी, कलकतिया हिंदी आदि।	राजभाषा में शब्दों की, विशेषकर तकनीकी, प्रशासनिक एवं कानूनी शब्दावली में, एकरूपता आवश्यक होती है। इसमें स्थानीय शब्दों के उपयोग की छूट नहीं होती है। अत: हर स्थान के व्यक्ति को शब्दों की एकरूपता का निर्वहन करना आवश्यक होता है।
राष्ट्रभाषा के उपयोग का क्षेत्र व्यापक है, क्योंकि वह देश की बहुसंख्यक जनता के व्यवहार एवं सम्पर्क की ऐसी भाषा है जो उन्हें राष्ट्रीयता का अहसास कराती है।	राजभाषा के अधिकांश शब्द पारिभाषिक होते हैं इसका अर्थ केवल संदर्भ से स्पष्ट नहीं होता। पारिभाषिक शब्दों के अर्थ सीखने ही पड़ते हैं, जिसके बिना वे कठिन प्रतीत होते हैं
राष्ट्रभाषा के अधिकांश शब्दों का अर्थ संदर्भ से ही स्पष्ट होता है, इसलिए राष्ट्रभाषा सरल प्रतीत होती है।	राजभाषा के उपयोग का क्षेत्र मुख्यत: सरकार के कार्यों तक सीमित है।
राष्ट्रभाषा का सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से विशेष महत्व होता है।	राजभाषा का सरकारी कामकाज की दृष्टि से विशेष महत्व होता है।

कान की आत्मकथा

मैं कान हूँ........ हम दो हैं... दोनों जुड़वां भाई... लेकिन...!! हमारी किस्मत ही ऐसी है कि आज तक हमने एक दूसरे को देखा तक नहीं। पता नहीं..!! कौन से श्राप के कारण हमें विपरीत दिशा में चिपका कर भेजा गया है । दु:ख सिर्फ इतना ही नहीं है, हमें जिम्मेदारी सिर्फ सुनने की मिली है।

गालियाँ हों या तालियाँ, अच्छा हो या बुरा, सब कुछ हम ही सुनते हैं।

धीरे-धीरे हमें खूंटी समझा जाने लगा। चश्मे का बोझ डाला गया, फ्रेम की डण्डी को हम पर फँसाया गया। ये दर्द सहा हमने... क्यों भाई..??? चश्मे का मामला आंखों का है तो हमें बीच में घसीटने का मतलब क्या है...??? हम बोलते नहीं तो क्या हुआ, सुनते तो हैं ना..! हर जगह बोलने वाले ही क्यों आगे रहते है....??? बचपन में पढ़ाई में किसी का दिमाग काम न करें तो मास्टर जी हमें ही मरोड़ते हैं।

जवान हुए तो आदमी, औरतें सभी ने सुन्दर - सुन्दर, बालियाँ, झुमके आदि बनवाकर हम पर ही लटकाये...!!! छेदन हमारा हुआ और तारीफ चेहरे की ...!

और तो और..! श्रृंगार देखो..! आँखों के लिए काजल... मुंह के लिए क्रीमें... होंठों के लिए लिपस्टिक... हमने आज तक कुछ माँगा हो तो बताओ...

कभी किसी कवि ने, शायर ने, कान की कोई तारीफ की हो तो बताओ... इनकी नजर में आँखे, होंठ, गाल, ये ही सब कुछ है। हम तो जैसे किसी मृत्यु भोज की बची खुची दो पूड़ियाँ हैं, जिसे उठाकर चेहरे के साइड में चिपका दिया बस..! और तो और, कई बार बालों के चक्कर में हम पर भी कट लगते हैं। हमें डिटॉल लगाकर पुचकार दिया जाता है..!

बातें बहुत सी हैं, किससे कहें...???

कहते है दर्द बाँटने से मन हल्का हो जाता है। आँख से कहूँ तो वे आँसू टपकाती हैं, नाक से कहूँ तो वह बहती है, मुंह से कहूँ तो वह हाय हाय करके रोता है और बताऊँ..! पण्डित जी का जनेऊ, टेलर मास्टर की पेंसिल, मिस्त्री की बची हुई गुटके की पुड़िया, मोबाइल का इयरफोन सब हम ही सम्भालते हैं और आजकल ये नया-नया मास्क का झंझट भी हम ही झेल रहे है। कान नहीं जैसे पक्की खूँटियाँ हैं हम। और भी कुछ टाँगना, लटकाना हो तो ले आओ भाई... तैयार हैं हम दोनों भाई.....

मुरगांव पत्तन में अंतरराष्ट्रीय और देशी क्रूज टर्मिनलों, रो-पैक्स, फेरी और अन्य संबद्ध सुविधाओं का विकास।

भारत सरकार ने देश में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए क्रूज पर्यटन के विकास की परिकल्पना की है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए, एमपीए ने तदनुसार यह परियोजना बनाई है। इस परियोजना में विश्व स्तरीय अंतरराष्ट्रीय और देशी टर्मिनलों का विकास शामिल है, जो गोवा के प्रवेश द्वार के रूप में कार्य करेगा।

इस प्रयोजन के लिए मुरगांव पत्तन ने तकनीकी आर्थिक व्यवहार्यता रिपोर्ट तैयार करने के लिए मेसर्स टीम वन इंडिया प्रा. लिमिटेड, दि आर्किटेक्चरल डिज़ाइन एंड इंजीनियरिंग कंसल्टेंट और मेसर्स फीड बैक इंफ्रा प्रा. लिमिटेड, गुरुग्राम को नियुक्त किया है। मुरगांव पत्तन ने इस योजना के अनुमोदन और वित्त पोषण के लिए सभी विवरणों सहित व्यवहार्यता रिपोर्ट पोत परिवहन मंत्रालय को प्रस्तुत की थी और परियोजना के लिए अनुमोदन प्राप्त हो गया है।

- परियोजना की अनुमानित लागत 101.72 करोड़ रूपए है और 18 महीने की अवधि के भीतर इसे पूरा किया जाएगा।
- परियोजना के वित्तपोषण को पोत परिवहन मंत्रालय और पर्यटन मंत्रालय की सागरमाला योजना के तहत प्राप्त अनुदान के माध्यम से क्रियान्वित किया जाएगा।

प्रस्तावित सुविधाएं :

- प्रस्तावित विकास में स्टेट ऑफ आर्ट टर्मिनल बिल्डिंग हाउसिंग अंतरराष्ट्रीय और देशी क्रूज़ टर्मिनलों के साथ–साथ संबद्ध सुविधाएं शामिल
- सहायक वाणिज्यिक भवन को शॉपिंग जोन के रूप में विकसित किया जाएगा।
- आंतरिक सड़क नेटवर्क और उपयोगिताओं के साथ पार्किंग, भूनिर्माण और सौंदर्यीकरण के लिए क्षेत्र होगा।
- प्रस्तावित जटिल विकास के क्षेत्र इस प्रकार है;
- अंतरराष्ट्रीय और देशी क्रूज़ टर्मिनल – 9872 वर्ग मी.
- सहायक वाणिज्यिक भवन – 3736 वर्ग मी.

परियोजना के लाभ:

- देशी और साथ ही अंतर्राष्ट्रीय क्रूज से हिंटरलैण्ड परिवहन में वृध्दि।
- टैक्सी प्रचालन, सामान निकासी, रेस्तरां, हाउसकीपिंग, स्थानीय हस्तशिल्प बनाने वाले कुटीर उद्योगों और अन्य संबंधित गतिविधियों के लिए रोजगार (प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष) उत्पन्न होगा।
- पर्यटन संबंधी उद्योगों को बढ़ावा देने से गोवा सरकार को अप्रत्यक्ष लाभ।
- क्रूज यात्रियों और स्थानीय लोगों के लिए लगातार और यथा समय फेरी/रोरो सेवाएं प्रदान की जाएगी।

मौजूदा स्थिति:

- कोचीन पत्तन प्राधिकरण को कथित परियोजना हेतु परियोजना प्रबंधन सलाहकार के रूप में नियुक्त किया गया है।
- ईपीसी संविदा दि. 15/03/2022 को सौंपी गई है और ठेकेदार, मेसर्स आरसीसी – एसीसी (जेवी) ने दि. 01/04/2022 से 18 महीने की कार्य समापन अवधि सहित काम शुरू कर दिया है।
- 30 वर्षों की अवधि के लिए 22.00 करोड़ रुपये के अनुमानित निवेश पर' पीपीपी मोड पर मुरगांव पत्तन, गोवा में अंतर्राष्ट्रीय और देशी क्रूज टर्मिनल और फेरी टर्मिनल के प्रचालन और रखरखाव' के लिए निविदा दि. 8 अक्तूबर 2021 को जारी की जा चुकी है। निविदाएं दि. 7 जुलाई, 2022 को खोली गई और तकनीकी बोलियों की मूल्यांकन प्रक्रिया जारी है।

मुरगांव पत्तन में नवीकरणीय ऊर्जा की ऊर्जा खपत को 2025 तक लगभग 60% तक बढ़ाना

- सौर ऊर्जा स्वच्छ नवीकरणीय ऊर्जा उत्पन्न करने के लिए सूर्य का उपयोग करती है। सौर विद्युत प्रणाली द्वारा उत्पादित बिजली पारंपरिक बिजली उत्पादन की आवश्यकता को विस्थापित करती है। यह अनुमान लगाया गया है कि स्थापित सौर ऊर्जा का प्रत्येक किलोवाट अपने परिचालन काल के दौरान 14,000 पाउंड CO_2 (ग्लोबल वार्मिंग से जुड़ा) और 30 पाउंड NO_x (स्मॉग का एक स्रोत) को रोकता है।

- वर्ष 2016 में, पोत परिवहन मंत्रालय ने मुरगांव पत्तन को स्वच्छ नवीकरणीय ऊर्जा उत्पन्न करने के लिए पत्तन में रूफटॉप सौर ऊर्जा परियोजना के लिए एक योजना कार्यान्वित करने का निर्देश दिया था।

- तदनुसार, सौर ऊर्जा उत्पन्न करने के लिए अस्पताल और प्रशासनिक कार्यालय में पोर्ट रूफटॉप भवनों की अव्यक्त क्षमता का आकलन करने के बाद, प्रीमियर सोलर सिस्टम्स (पी) लिमिटेड, सिकंदराबाद द्वारा अक्तूबर 2016 में कैपेक्स मॉडल के तहत 1.45 करोड़ रुपये की कुल लागत पर (पूंजीगत व्यय) संस्थापित कुल रूफटॉप ग्रिड एसपीवी पावर प्लांट क्षमता 240 केडब्ल्यूपी डीसी (अस्पताल में 180 केडब्ल्यूपी और प्रशासनिक कार्यालय में 60 केडब्ल्यूपी) थी।

- सौर फोटोवोल्टिक मॉड्यूल (एसपीवी) फोटोवोल्टिक कोशिकाओं की एक पैकेज्ड, इंटरकनेक्टेड असेंबली है, जो सूर्य के प्रकाश को विद्युत शक्ति में परिवर्तित करती है। प्रशासनिक भवन में स्थापित एसपीवी मॉड्यूल की संख्या 240 हैं तथा अस्पताल भवन में स्थापित एसपीवी मॉड्यूल की संख्या 720 हैं। ये प्रत्येक 250 वाट दर के पॉली–क्रिस्टलीय प्रकार के मॉड्यूल हैं।

- हालांकि पीवी पैनल 25 साल की निष्पादन वारंटी के साथ आते हैं, लेकिन उनके जीवन काल के दूसरे और तीसरे दशक के दौरान गिरावट दर अधिक होती है और उनकी विशिष्ट उपज काफी कम हो जाती है। इसके अलावा, तटीय क्षेत्र में अत्यधिक खारा वातावरण को देखते हुए और चूंकि सौर पैनल आंशिक रूप से इलेक्ट्रॉनिक हैं और कुछ वर्षों के बाद अप्रचलित हो जाते हैं, इसलिए बिजली संयंत्रों से सौर ऊर्जा के उपयोग के लिए 10 वर्ष की अवधि सबसे उचित पाई गई। उद्योग नीति के अुसार, 5 साल की वारंटी अवधि सहित 5 साल के व्यापक वार्षिक रखरखाव अनुबंध के साथ काम शुरू किया गया था जैसा कि अन्य पत्तनों द्वारा अपनाया जा रहा था।

- दि. 31.03.2022 तक एमपीए में 200 kW (240 **kWp**) SPV पावर प्लांट द्वारा उत्पन्न ऊर्जा 18.96 लाख यूनिट है। प्लांट की मानिटरिंग डेलरेमो रिमोट सिस्टम से की जा रही है।

- जून 2021 में आयोजित मरीटाईम विजन इम्प्लिटेशन कमिटी (एमवीआईसी) की बैठक के दौरान, नवीकरणीय उर्जा की क्षमता को मौजूदा 3% से बढ़ाने की दिशा में प्रगति की समीक्षा करने के लिए, अध्यक्ष ने नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (एमएनआरई) के प्रशासनिक नियंत्रण के तहत एक सीपीएसयू सौर ऊर्जा निगम लिमिटेड (एसईसीआई) के परामर्श से पत्तन में नवीकरणीय सौर ऊर्जा के उपयोग की बढ़ती प्रमात्रा की संभावना का पता लगाने का निर्देश दिया।

- तदनुसार, पत्तन ने रिन्यूएबल एनर्जी सर्विस कंपनी (रेस्को) मॉडल के तहत नवीकरणीय ऊर्जा मूल्यांकन करने के लिए मेसर्स सोलर एनर्जी कार्पोरेशन ऑफ इंडिया लि., नई दिल्ली, (एसईसीआई) को नियोजित किया।

- एसईसीआई के आकलन के अनुसार हैडलैण्ड में एमपीए अस्पताल के पास प्रस्तावित सौर संयंत्र, जिसका भूमि क्षेत्र 1.33 एकड़ है और जिससे 0.28 मेगावाट सौर क्षमता उत्पन्न होने की अपेक्षा है, वह तकनीकी रूप से व्यवहार्य नहीं पाया गया, क्योंकि ऊर्जा की स्तरीय लागत (एलसीओई) पत्तन द्वारा भुगतान किए गए वर्तमान ऊर्जा प्रभारों से अधिक गणना की जाती है।

- तदनुसार, पत्तन अब ओपन एक्सेस सिस्टम के माध्यम से 1.4 मेगावाट की सौर ऊर्जा प्राप्त करने की संभावना की खोज कर रहा है ताकि 2025 तक नवीकरणीय ऊर्जा की ऊर्जा खपत को लगभग 60% तक बढ़ाया जा सके।

मुरगांव पत्तन के बायना स्थित रेलवे यार्ड में अप रैम्प का निर्माण

चार मार्गीय सड़क संपर्क परियोजना के भाग के रूप में, पीडब्ल्यूडी / गोवा ने एलिवेटेड रोड से एक डाउन रैम्प बनाने की योजना बनाई है, जो बायना स्थित पत्तन क्षेत्र में उतरेगा।

पत्तन ने पीडब्ल्यूडी, गोवा से अनुरोध किया था कि वह बायना स्थित मुरगांव पत्तन के रेलवे यार्ड से एक अप–रैम्प टेक–ऑफ का निर्माण करें। ऐसा इसलिए है क्योंकि पत्तन के पास बायना क्षेत्र में लगभग 11.00 एकड़ भूमि है जिसका उपयोग पत्तन संबंधी गतिविधियों के लिए किया जा सकता है। हालांकि पीडब्ल्यूडी, गोवा सरकार काम की शुरूआत नहीं कर सका और मुरगांव पत्तन से उसका निर्माण करने का अनुरोध किया। फ्लाईओवर से केवल एक डाउन रैम्प उतरने से, डाउन रैम्प का सीमित उपयोग होगा, जबकि अप और डाउन रैम्प दोनों से, उचित यातायात परिचालन और पत्तन भूमि की बेहतर उपयोगिता क्षमता होगी।

सागरमाला दिशानिर्देशों पर काम शुरू किया गया है। परियोजना को ईपीसी आधार पर अनुबंध के माध्यम से कार्यान्वित किया जा रहा है और दि. 14.03.2022 को सफल बोलीदाता को स्वीकृति पत्र दिया गया है।

परियोजना के पूरा होने पर पत्तन के भीतर और बाहर सड़क नेटवर्क से उचित कनेक्टिविटी सहित अतिरिक्त बाधा मुक्त भंडारण क्षेत्र के उद्देश्य को पूरा करेगा।

धन्य है वह भारत देश की भारतीय नारी

भारत देश की भारतीय नारी की बात करें तो भारतीय नारी ने भारतीय संस्कारों को दिल से अपनाया है। नारी हर रुप में प्यार, त्याग और तपस्या का रुप है। संस्कारों को प्रदान करने वाली नारी ही प्रथम गुरु है।

नारी के बहुत सारे रुप है जैसे, बेटी, पत्नी, माँ आदि ...

अगर हम बेटी के बारे में बोले तो, बेटी एक, माँ लक्ष्मी का रुप मानी जाती है, जिससे घर की खुशियाँ बढ़ने लगती है। बेटी हर किसी के नसीब में नहीं होती है। पत्नी के बारे में बोले तो पत्नी अपने परिवार की खुशियों के लिए जीती है और वह यही चाहती है कि उसका परिवार हमेशा प्रसन्न और समाज में उसकी प्रतिष्ठा बनी रहे। माँ के बारे में क्या बोले वह तो अपनी संतान को तथा परिवार को संस्कारों से जोड़े रखती है।

नारी के अन्दर बहुत सारे गुण होते है जैसे बच्चों के लिए ममता, पति के लिए चरित्रवान, समाज के लिए शीलता, मित्र के लिए सहयोगी। नारी का जीवन एक पवित्र ज्योति के समान है जो खुद कष्ट झेलकर दूसरों को जीवन देती है। नारी ही संसार की संस्कृति, सभ्यता और संस्कार की देवी मानी जाती है। दूसरों के प्रति सम्मान, सद्‌भावना, सद् विचार, तथा लज्जा यह सब सद्‌गुण नारी की सुन्दरता को चार चाँद लगा देते है।

भारतीय नारी जब गृहिणी के रुप में होती है तब पतिव्रता धर्म का पालन करने के लिए वह बड़े से बड़े कष्टों को सहती है। उसने समाज को संदेश दिया है कि वह अगर प्रेम कर सकती है तो नफरत उसमें उतनी ही भरी है जो अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए उसके हथियार का प्रयोग भी करेगी।

भारतीय नारी आदर्शों से भरी हुई है। भारतीय नारी में इतनी क्षमता है कि वह बिना किसी के सहयोग से पूरे परिवार का बोझ ऊठा सकती है। अपनी संतान को स्वावलंबी बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ती तथा अपनी संतान को आदर्श नागरिक के रुप में देखना चाहती है। भारतीय नारी में इतना अथाह प्रेम भरा हुआ है कि प्रकृति भी इनकी गोद में खेलने के लालायित हो जाती है।

भारतीय नारी दुनिया के किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं है, चाहे वह घर गृहस्थी हो, राजनीति हो, खेल हो, मनोरंजन हो, नृत्य हो, संगीत हो, नौकरी हो, व्यवसाय हो या शिक्षा का क्षेत्र हो। वह आज पुरुष से कंधे से कंधा मिलाकर चलती है। जिसके अंदर भारतीय नारी के प्रति सम्मान नहीं है वह सब कुछ प्राप्त करते हुए भी कुछ भी प्राप्त नहीं करता। धन्य है वह भारत देश की भारतीय नारी।

जयंती सदा पालकर
प्रधान लिपिक, वित्त विभाग

हिंदी मेरी मातृभाषा है

पाठशाला के पुस्तकालय की मेज पर दो किताबें अगल-बगल रखी बोर हो रही थी। एक थी हिंदी वर्णमाला, दूसरी थी अंग्रेजी वर्णमाला। हिंदी की किताब से चुप रहा नहीं गया तो उसने अंग्रेजी की किताब से बातचीत का सिलसिला शुरू किया।

नमस्ते मित्र कैसी हो ?

अंग्रेजी वर्णमाला की किताब ने इतराते हुए जवाब दिया, 'फाइन, थैंक्स, एंड यू ?' हिंदी अचंभित थी। समझ तो आ रहा था कि अंग्रेजी में क्या कहा,पर 4 शब्दों में सवाल-जवाब और आभार तीनों ?

हिंदी की किताब ने खुद को कमतर आंकते हुए धीरे से कहा, मैं ठीक हूं, बस अपनी बारी का इंतजार कर रही हूं कि कब कोई शिक्षक आए और किसी कक्षा में मुझे पढ़ाए। उकता रही थी तो सोचा तुमसे बात कर लूं।

सच, तुम कितनी पतली हो ? कम शब्दों में सब कुछ समेटे हुए हो। 5 स्वरों और 21 व्यंजनों में तुम्हारी पूरी दुनिया है और सौभाग्यशाली हो कि पूरी दुनिया पर राज करती हो। कैसे कर लेती हो इतना। अब अंग्रेजी की किताब थोड़ी सहज हुई और इतराना छोड़कर अब की बार हिंदी में बोली, बहन तुम खुद को कम मत समझो। सच तो यह है कि तुम संस्कृत और संस्कृति की बेटी हो। तुम में तो भाव, अर्थ, विन्यास और विकास के साथ-साथ हर बोली और भाषा को खुद में समाहित करने की क्षमता है। दरअसल मेरे एक भी अक्षर तुम्हारे सहयोग के बिना उच्चारित भी नहीं हो सकते। 'ए' से लेकर 'जेड' तक सभी अक्षरों को बोल कर देखो, तुम्हें समझ आ जाएगा कि तुम्हारा अंश मात्र हूं मैं।

मैं छोटी हूं, व्याकरण सीमित है और कई जगह मेरे एक ही शब्द में काम चल जाता है इसलिए मनुष्य ने अपनी सहूलियत के लिए मुझे इस्तेमाल किया और राजनीति में हथियार बना लिया जिससे मेरा विस्तार रूक गया। बस प्रचार ही हुआ, जबकि तुम्हारे एक- एक शब्द के कितने ही पर्यायवाची है, तुम रोचक हो।

सबसे बड़ी बात तुमने अनेक बोलियों और भाषाओं को जन्म दिया, अनेक बोलियों और भाषाओं को खुद में समाहित किया। तभी तो संपूर्ण भारतीय संस्कृति भारत माता की तरह ही तुम्हारा भी सम्मान करती है। अंग्रेजी तो केवल काम करने की सहूलियत के लिए इस्तेमाल होती है।

बहन हम दोनों ही भाषाएं हैं, पर तुम वृहद और सहृदय हो। तुम में सागर-सी विशालता है। मैं मात्र नदी हूं। मेरा उद्‌गम और संगम भी मुझे ठीक मालूम नहीं। मेरा मौलिक निवास भी निश्चित नहीं। यूं तो मैं अंतर्राष्ट्रीय कहलाती हूं, पर मेरा कोई नियत आवास नहीं। मैं केवल व्यापार के लिए उपयोगी बनकर रखी जाऊंगी जब कि तुम अपने व्यवहार के लिए सम्माननीय हो। केवल व्यापार और व्यवहार नहीं अपितु विश्व गुरु बनने की हर योग्यता तुम में है और सबसे बड़ी बात जिस संस्कृति ने तुम्हें रचा, वहां की मिट्टी में रची बसी हो। तुम पर हर भारतीय अभिमान करता है। कभी-कभी तो ईर्ष्या होती है तुमसे कि तुम भाषा होकर भी मां हो और मैं सिर्फ और सिर्फ भाषा।

हिंदी की किताब अपने आंसू नहीं रोक पा रही थी। अंग्रेजी की किताब के प्रति प्रेम और सम्मान दोनों ही बढ़ गए। दूसरी तरफ यह भी विचार कौंधा कि मुझ पर अभिमान कर रहा मेरा ही भारत मुझे राष्ट्रभाषा न बना सका और मेरी बहन अंग्रेजी भाषा मुझे इतना सम्मान दे रही है। तभी पुस्तकालय में शिक्षकों का प्रवेश हुआ। एक ने कहा कि अंग्रेजी की किताब रहने दो, वो मिस्टर वर्मा ही पढाएंगे, मुझे तो हिंदी पढ़ाने में ही मजा आता है। किसी भी कक्षा में बिना किताब के भी सहजता से पढ़ा सकता हूं, क्योंकि वह मेरी मातृभाषा है।

दूसरे ने कहा, सही कहते हो भाई। अपनी भाषा में सब सहज है और इस उम्र में किताब से सीखकर पढ़ना-पढ़ाना मेरे भी बस का काम नहीं।

पहले ने कहा ठीक है मिस्टर वर्मा के आने तक अंग्रेजी की कक्षा स्थगित ही रखते हैं और हिंदी की कक्षाएं सुविधानुसार सभी कक्षाओं में अन्य शिक्षकों की सहायता से जारी रखते हैं। यह कहकर अंग्रेजी की किताब को छोड़कर शिक्षक हिंदी की किताब लेकर जाने लगे।

हिंदी और अंग्रेजी की किताबें एक दूसरे को उदास होकर देखने लगी, मानो मौका मिलता तो अभी गले मिलकर रो पड़तीं।

अंग्रेजी की किताब इसलिए रोना चाहती थी कि ये सिर्फ काम के लिए पढ़ते हैं और हिंदी की किताब अपनी मूर्खता पर कि कुछ अज्ञानियों के कारण वह अपने ही महत्व को कम आंक रही थी, आज अंग्रेजी ने मुझे मेरी अहमियत का एहसास न कराया होता तो मैं कुंठित होकर ही मर जाती !

संकलित

विवशता

दिन रात पापी
पेट भरता रहा
प्रसाद का कंद न खा सका
हर पल
माला
जपता रहा
मन का द्वन्द न भगा सका
माया के इस
महाजाल में
परमानन्द न पा सका
काम लोभ मद मोह को
अब तक
ठण्ड न दिला सका

बच्चे को
कृष्ण नाम दिया
स्वयं को
नन्द न बना सका
तुम मेरी
मैं तेरा लिखा
भक्ति का इक
छंद न बना सका
हे प्रभु
ये कैसी विवशता
जिसका अब तक
अंत न आ सका

कप्तान मनोज जोशी
उप संरक्षक /समुद्री विभाग

अपनी गलती को स्वीकार करें।

हर कोई गलती करता है लेकिन लोग गलतियाँ स्वीकार करने में शर्म महसूस करते हैं। अगर आप अपने काम के प्रति, अपने आसपास के लोगों के प्रति और अपने खुद के प्रति ईमानदार हैं तो आपको गलती स्वीकारने से डरना नहीं चाहिए। यह बहुत सारी समस्याओं को दूर कर सकता है। हो सकता है कि उसी वक्त अपनी गलती मानना कठिन होता हो क्योंकि अपनी गलती मानने में बहुत साहस की जरूरत पड़ती हैं। लेकिन गलती स्वीकार करना आपको भविष्य के किसी नुकसान से बचा सकता है। गलती स्वीकारने की भी एक कला होती है जिसे आपको जरूर सीखना चाहिए। यहां पर गलती स्वीकारने के बहुत सारे फायदे नीचे दिए गए हैं :

गलती मानने के 5 फायदे

1. आपको अपराध बोध (ग्लानि) से बचाता है :- हो सकता है कि आपको भी गलती छुपाना ज्यादा आरामदायक और सुरक्षित लगता हो। लेकिन ये तो पक्का हैं कि आप अपने भीतर ही भीतर असहज महसूस करेंगे। जब आप अपनी गलती छुपाते हो और इसके बारे में झूठ बोलते हो तो आप अपराध बोध की भावना से गिर जाते हो और यह अपराध बोध की भावना समय के साथ और गहरी होती जाती है और यह आपको अंदर से खोखला कर देती हैं। लेकिन गलती समय पर स्वीकार कर लोगे तो इस तरह की परिस्थिति से बच सकते हो। गलती स्वीकारना आपको मजबूत बना देगा, बिना किसी अपराध बोध और शर्म के।

2. आपको झूठ बोलने की जरूरत नहीं पड़ेगी :- हम जानते हैं कि एक गलती को छुपाने के लिए अपने को बहुत सारे झूठ बोलने पड़ते हैं। लेकिन जब गलती स्वीकार कर लोगे तो फिर झूठ बोलने की क्या जरूरत। गलती स्वीकारने का यह सबसे बड़ा फायदा हैं और गलती स्वीकारने में आपको इतनी परेशानी नहीं होगी जितनी गलती छुपाने से हो सकती है। आप गलती स्वीकार करोगे तो आपको यह याद रखने की जरूरत भी नहीं पड़ेगी कि आपने किस जगह, कौनसा झूठ बोला था।

3. गलती सुधारने की ज्यादा संभावना है :- यदि आप गलती सुधारना चाहते हैं या आगे भविष्य की गलतियों से बचना चाहते हैं, तो सबसे पहले वह गलती स्वीकार करें। अपनी गलती को स्वीकार करने से आप सही गलत के बीच अंतर कर पाएंगे। तो ज्यादा संभावना है कि आप उसे ठीक भी कर पाएंगे। इसलिए लोग क्या कहेंगे इसे छोड़ कर उसे ठीक करने के लिए गलती स्वीकार करें और अपनी गलतियों से जितना ज्यादा हो सके सीखने की कोशिश करें। याद रखें आपकी गलतियां और इनको स्वीकार करने की काबिलियत और इनसे सीखने की ललक, आप को महान इंसान बना देगी।

4. आगे बढ़ने में मदद करेगा :- गलती स्वीकार करना आपको आगे बढ़ना में भी मदद करता है। आपका आगे बढ़ना असंभव होगा, यदि आप भूतकाल के किसी अपराध बोध से ग्रसित हो। क्योंकि जो भी गलती की है उसे न स्वीकारने पर मन में एक तरह का अपराध बोध रह जाता है। वह ना चाहते हुए भी आपके साथ आएगा और यह आपको आगे बढ़ने से रोकेगा। इसलिए जितनी जल्दी हो सके गलती स्वीकार करें ताकि आप बिना किसी बोझ के, अपने अतीत को भूलाकर, वर्तमान समय पर फोकस करके आगे बढ़ सके। इस तरह आप गलती स्वीकारने से आगे बढ़ जाएंगे।

5. आपको विनम्र बनाएगा :- कहते हैं कि जीवन में कभी माफी मांगनी पड़े या आपको झुकना पड़े तो कोई बात नहीं, क्योंकि झुकता वही है, जिसमें जान होती है। वरना अकड़ तो मुर्दे की पहचान होती है। तो आप गलतियां छुपा के कठोर ना बने। गलतियां सबसे होती हैं। कोई भी इंसान परफेक्ट नहीं होता है इसलिए गलतियां स्वीकारने में हिचकिचाना नहीं चाहिए। अगर आप अपना अड़ियल स्वभाव छोड़कर अपनी गलती स्वीकारते हैं, तो लोगों के बीच आप विनम्र स्वभाव के व्यक्ति बन जाओगे। गलती स्वीकार लो और माफी मांग लो, इससे परिस्थितियां और खराब होने से बच जाएगी।

कहते हैं कि हर गलती माफ की जा सकती है अगर आप में स्वीकारने का साहस हो।

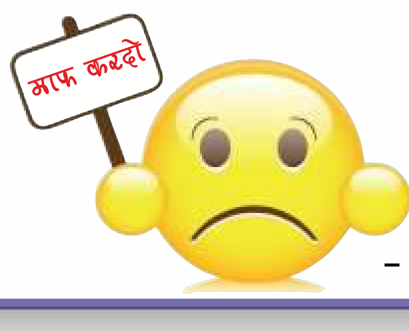

– संकलित

मेरे सपनों का भारत

भारत मेरा देश है और मुझे उसके गौरवशाली इतिहास, परंपरा, यहां के जवान, किसान तथा सांस्कृतिक एकात्मता पर गर्व है। हमारा भारत 15 अगस्त, 1947 को अंग्रेजों की गुलामी के जंजीरों से मुक्त हुआ था। आज पूरा देश भारत की आज़ादी का अमृत महोत्सव मनाने के लिए सज्ज हो रहा है। पिछले 75 सालों में हमारे देश ने हर क्षेत्र में तरक्की की है परंतु मैं चाहती हूँ कि आने वाले सालों में भारत विश्व का सबसे शक्तिशाली देश बनें।

मैं चाहती हूँ कि मेरे सपनों के भारत में हर एक व्यक्ति शिक्षित हो। हर एक को शिक्षा, और रोजगार के उचित अवसर प्राप्त हो। बच्चों और स्त्रियों पर होने वाले अत्याचार, घरेलू हिंसा, भ्रूण हत्या, बलात्कार जैसे शर्मनाक हादसे फिर कभी न हो। हर स्त्री, हर बच्चा खुद को सुरक्षित महसूस करें। हर बच्चा स्वस्थ हो। कोई कुपोषण का शिकार न हो। पुरुष और महिलाओं को समान अधिकार तथा सम्मान प्राप्त हो।

हमारा भारत कृषि प्रधान देश है, अतः मेरे सपनों के भारत में किसानों को सबसे ऊँचा दर्जा प्राप्त हो ताकि किसी लाचार किसान को आत्महत्या न करनी पड़े। धर्म, जाति, प्रांत, सम्प्रदाय, ऊंच-नीच अमीर-गरीब का भेद मिट जाए। हर नागरिक को रोटी, कपड़ा, मकान तथा अन्य आवश्यक सुविधा प्राप्त हो। मेरे सपनों के भारत में हर व्यक्ति मेहनत, लगन, ईमानदारी से देश की सेवा कर सच्चे देशभक्त बनें। भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी दंगा-फसाद, चोरी-डकैती, खून-खराबा जैसी सामाजिक बुराईयां जो देश को खोखला बना देती हैं, इनसे देश आज़ाद हो जाएं।

हमारा देश परावलंबन से मुक्त हो तथा स्वावलंबी बने। शिक्षा, स्वास्थ्य, औद्योगिकी, तकनीकी, अनुसंधान, कृषि, हर क्षेत्र में क्रांति हो। हमारा देश गंदगी तथा प्रदूषण से मुक्त होकर फिर से स्वच्छ और हरा - भरा बने। मानव संसाधनों और प्राकृतिक संसाधनों का एक सेतु बनाकर इसे विकास के साथ जोड़कर देश को उन्नति के ऊंचे शिखर तक पहुंचाए। हमारा पावन, आध्यात्मिक, शांतिप्रिय भारत देश पूरे विश्व में एक आदर्श देश बनें।

जय हिंद ! जय भारत !

श्रीमती पल्पिनी संदेश आलोर्नेकर,
पत्नी - श्री. संदेश आलोर्नेकर, जेई (एम)
यांत्रिक इंजीनियरी विभाग

मन की बात

अपनी गलती को अपने सिर पर मत रखो, उसका वजन आपको कुचल सकता है, इसके बजाय, उसे अपने पैरों के नीचे रखो और उन्हें अपने व्यक्तित्व को ऊपर उठाने के लिए एक मंच के रूप में उपयोग करो ।

एम. बी. हुंगुंड,
सहायक अभियंता (एम)
सी. एम. ई. विभाग

मैं कन्या हूँ

मैं कन्या हूँ, मैं कन्या हूँ,
भारत मां की प्यारी बेटी हूँ,
मैं उस नारी जाति की बेटी हूँ,
जिसे लक्ष्मी, सरस्वती और मां दुर्गा के रूप में पूजा जाता है।

फिर ऐसा क्या हो गया,
कि आज मुझे अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़नी पड़ रही है?

मैं अनमोल हूँ और जो किस्मत वाले होते हैं,
ईश्वर उन्हीं को कन्या रूपी धन देते हैं।

फिर ऐसा क्यों है कि
मुझ जैसी कन्याएं जब पैदा होती हैं,
तब हमारे समाज में कुछ लोग खुशी नहीं मनाते?
उस नन्हीं कली को खिलने नहीं देते है?
क्यों जन्म से पहले ही हमारा अस्तित्व खत्म कर देते है?

कई बार सुना है कि मैं साहस, त्याग, दया और ममता का प्रतीक हूँ,
फिर क्यों मैं घूट-घूट कर सब कुछ सहती हूँ
और आंसू छुप छुपा कर रोती हूँ?

मैं अबला- नादान नहीं हूँ,
दबी हुई पहचान तो बिल्कुल भी नहीं हूँ।
है मुझमें वो काबिलियत, कदम से कदम मिलाकर चल सकती हूँ।

फिर भी क्यों है यह गलत मानसिकता हमारी ओर,
सोचती रहती हूँ कि क्या मैं इस धरती पर अपने पंखों को उड़ान दे पाऊंगी?
क्या मुझे उडने दिया जाएगा?

मैं कन्या हूँ, मैं भी जीना चाहती हूँ,
और इस सुंदर संसार में थोड़ा सा आसरा चाहती हूँ।

मैं भी पढ़ना चाहती हूँ,
आशाओं के आसमान में चांद बनकर चमकना चाहती हूँ।
अपने मां- बाबा का नाम रोशन करना चाहती हूँ।

मैं कन्या हूँ,
मैं भी जीवन की इस बगिया में,
फूल बनकर महकना चाहती हूँ।
चिड़ियों की तरह मैं भी चहकना चाहती हूँ ।

जानती हूँ, मैं लड़कों के जैसी नहीं हूँ,
लेकिन लड़कों से कम तो बिल्कुल भी नहीं हूँ,

सिर्फ एक ही मांग है सबसे,
कन्या और पुत्र में भेदभाव मत करना।

मैं भी तो इंसान हूँ, मुझे इंसान तो समझना,
मैं भी तो इंसान हूँ, मुझे इंसान तो समझना।

मैं कन्या हूँ, मेरा भी एक वजूद है, मेरा भी एक सपना है,
जिस युग में दोनों नर-नारी कदम से कदम मिलाकर चलते होंगे,
मैं भविष्य स्वर्णिम युग की एक आशा की चिंगारी बनना चाहती हूँ,

मैं कन्या हूँ, मैं कन्या हूँ,
मैं बस जीना चाहती हूँ, मैं बस जीना चाहती हूँ !!!

श्रीमती सपना म्हांबरे
पत्नी-श्री दिनेश प्रभु म्हांबरे, संपदा अधिकारी
सिविल इंजीनियरी विभाग

जिंदगी

जिंदगी एक सफर है।
जिंदगी में संभलना जरूरी है।

खुशियाँ बांटते रहना जिंदगी है।
जिंदगी एक सफर है।

मिल जुलकर रहना है।
हँसना, हँसाते रहना है।
सबके साथ मिलकर रहना जरूरी है।

जिंदगी एक सफर है।
कोई नहीं आता मरने पर।
सच्चा प्यार मीठा होता है
यही हमारी कमाई है।
जिंदगी एक सफर है।

जिंदगी एक सफर है।
प्यार को तोलना नहीं।
बिना पैसों के मूल्य नहीं।
इसको संभालना जरूरी है।

जिंदगी एक सफर है।
शांति से मिलजुलकर,
सुख-दु:ख बांटकर साथ रहना जरूरी है।

जिंदगी एक सफर है।
जब तक रहें तब तक रहना है।
प्यार से रहना है।
जो है उसमें खुशी बांटकर
जीना है, सुंदर जीवन यही है।

जिंदगी एक सफर है,
भगवान से प्रार्थना करो।

सबको अच्छा रखो।
ये जिंदगी दुबारा नहीं आती।

खुशी बांटते - बांटते अमूल्य जीवन
जीना जरूरी है।

जिंदगी एक सफर है।
ऊंच-नीच, अमीर-गरीब
मत गिनो,

सभी हमारे मानव जीवन
का हिस्सा है।
प्यार बांटकर जिंदगी जियो,
यही है जिंदगी

जिंदगी एक सफर है।

श्री सुरेश एस.पी. पाटिल
मुख्य अभियंता/ सिविल इंजी. विभाग

निः स्वार्थ 'कर्म' करते रहो,
जो भी होगा 'अच्छा' ही होगा।

थोडा "Late" होगा, पर "Latest" होगा।

'बुरा' करने का विचार आए तो,
'कल' पर टालें।

'अच्छा' करने का विचार आए तो,
'आज' ही कर डालें।

यही है सुखी जीवन का मंत्र

यादें

जीते हैं हम तेरी यादों के सहारे,
मरते हैं हम तेरी यादों के मारे,
ना हम उसे भूला पाते हैं,
ना वो हमें भूला पाते हैं,

एक दुजे के दिल में रहते हैं,
दर्द का तुफान सहते हैं,
ये यादें बहुत ही खास होती हैं,
बीते दिनों की याद दिलाती है

चाहत की ख्वाहिश होती है,
जीने की आस दिखाती है,
कभी हंसाती है कभी रुलाती है,
कभी खामोश आँखों में प्यास जगाती है,

कभी उम्मीदों के ख्वाब दिखाती है यह यादें,
हद से ज्यादा सताती है यादें,
सब्र का इम्तहान लेती है यादें,
चाँद भी रोया था रात भर तनहाईयों में,

किसी की यादों को सीने में दबा कर,
ग़म के आँसू पत्तों पर गिराकर,
गुज़र जाते हैं खूबसूरत लम्हें,
यू हीं यादों में फिसलकर,

यादें आशिक दिल की धड़कनों के बोल हैं,
पागल दिल का खेल है।

सुधा प्रभुदेसाई
वार्ड सिस्टर / चिकित्सा विभाग

सहजन का पेड़

प्रकृति में अनेक पेड़, पौधे, वृक्ष, झाडियाँ होती है। वैसे ही सहजन का पेड़ भी प्रकृति और मानव जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। सहजन का पेड़ मानव के लिए एक अनमोल वरदान है, यह पेड़ प्रकृति के चमत्कार से कम नहीं। सहजन को आयुर्वेद में अमृत समान माना गया है क्योंकि सहजन 300 से ज्यादा बीमारियों की दवा माना गया है। सहजन का पेड़ जड से लेकर फल तक बहुत ही गुणकारी होता है। इसके अलावा सहजन कई तरह के खनिज और पोषक तत्वों से भरपूर होता है। उसके पत्ते, फल,फूल औषधीय गुणों से भरे होते है। सहजन में दूध की तुलना में चार गुना कैल्शियम और दुगना प्रोटीन पाया जाता है।

सहजन की तने, पत्ते, छाल, फूल, फल अलग – अलग तरीकों से इस्तेमाल किए जा सकते है। जिसका सेवन करने से हमारा शरीर तंदुरुस्त रहता है और शरीर के सही विकास में भी सहायक होता है। सहजन की पत्तियों में आयुर्वेद का खजाना होता है। पत्तियों में फोलिक और फेनोलिक और लगभग 40 से ज्यादा एंटीऑक्सीडेंट पाए जाते है जो मधुमेह रोगी के लक्षणों को कम करने में सहायक होते है। अन्य कई सक्रिय घटक भी होते है जो शरीर के घातक कोशिकाओं के प्रभावों को कम करने में सहायक होते हैं। पत्तियों में अच्छी मात्रा में पोटैशियम होने के कारण रक्तचाप को कम करने में प्रभावी होता है।

सहजन की पत्तियां रक्त वर्धक, हड्डियों को मजबूती देने वाली और पित्त नियंत्रक भी है। सुपाच्य होने की वजह से सहजन लीवर को स्वस्थ रखने में भी बहुत मदद करता है। उसकी पत्तों में पीट्रिगोस्पेरमिन नाम का कार्यकारी तत्व रहता है जो जीवाणु प्रतिबंधक का कार्य करता है। पत्तियों की भाजी के सेवन से शारीरिक और मानसिक थकान, कमजोरी कम होती है और शक्ति का विकास होता है।

सिरदर्द होने पर सहजन की पत्तियों को पिस कर सर में लगाएं तो सर में ठंडक महसूस होती है। बालों में रूसी होने पर पत्तों की पेस्ट लगाने पर आराम मिलता है। चेहरे पर ये पेस्ट लगाने से चेहरे के मुंहासे कम होते है। पीलिया का रोग होने पर भी पत्तियों का रस उपयोग में आता है। पाचन क्रिया को ठीक रखने के लिए भी सहजन के फूलों का सेवन करना बेहतर रहता है। इन फूलों में फाइबर की मात्रा काफी होती है जो हमारे पाचन तंत्र को स्वस्थ रखने में सहायता करती है। फूलों के सेवन से बालों का झड़ना रुकता है, बालों का विकास होता है और रूखापन समाप्त होकर बालों की चमक बढ़ती है।

सहजन, भारत में अलग–अलग प्रदेशों में अलग–अलग नाम से जाना जाता है। कहीं इसे सहजन, कहीं मोरिंगा, कहीं सुरजन की फली, तो कहीं मुनगा कहते है। भारतीय घरों में सहजन का प्रयोग बहुत ज्यादा होता है। सहजन के पत्ते, फल, फूलों का उपयोग बहुत सारे व्यंजन बनाने में किया जाता है। इसका उपयोग अधिक से अधिक करना भी चाहिए जो हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता को मज़बूत बनाता है।

अभी सहजन के उपयोग से सेहत को होनेवाले लाभों के कारण और व्यापक जागरूकता के कारण सहजन का उपयोग भारत में ही नहीं पूरी दुनिया में किया जाता है।

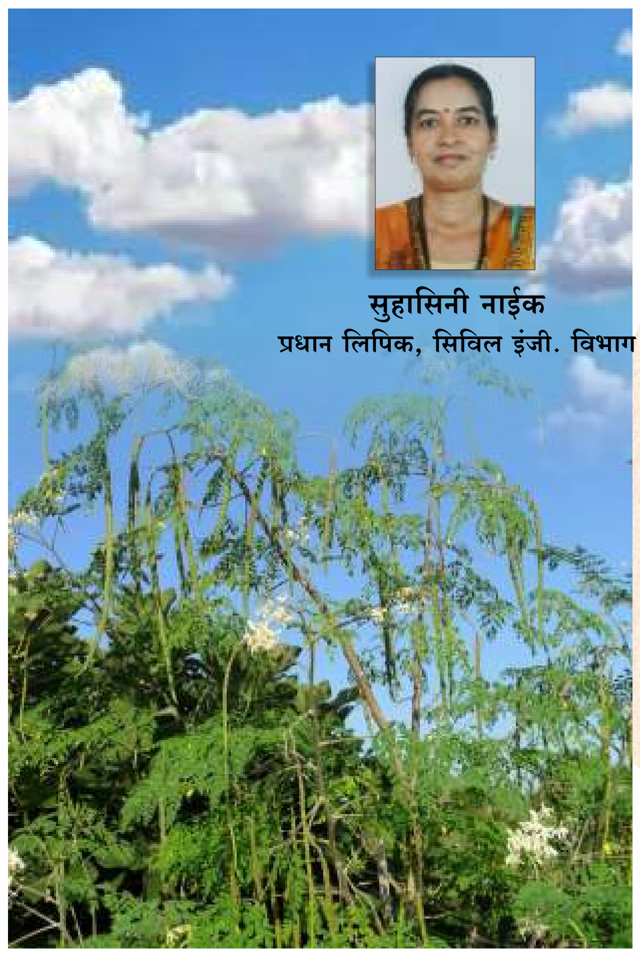

सुहासिनी नाईक
प्रधान लिपिक, सिविल इंजी. विभाग

श्रावण मास

श्रावण मास, आषाढ़ के बाद और भादो के पहले का महीना है। यह हिंदू पंचांग का महीना हैं और वर्षा ऋतु में पड़ता है। यह मास पूर्णमासी श्रावण नक्षत्र से युक्त होता है। इसीलिए इस मास को श्रावण कहते है। श्रवण का अर्थ होता है सुनना। इस मास में भगवान के स्वरूप के बारे में सुनने से मन के विकार दूर होते है। यही कारण है कि इस माह में धार्मिक ग्रंथों का श्रवण करने का विशेष महत्व बन गया है। यह माह पाप को मिटाने वाला और मनोकामना की पूर्ति करने वाला माह है। इस माह में ईश्वर के नाम स्मरण का फल मिलना तय है।

श्रावण मास में मनाए जाने वाले मुख्य हिंदू त्यौहारों में रक्षाबंधन, नागपंचमी और हरियाली है। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का महोत्सव सावन महीने के पूर्णिमा के बाद आने वाली अष्टमी के दिन मनाया जाता है। सावन महीना लोगों को ईश्वर से जुड़ने का और भगवान की भक्ति के लिए सबसे उत्तम है। यह महीना भगवान शिवशंकर को बहुत प्रिय है। यह पूरा महीना भक्तिमय गीतों और धार्मिक माहौल का होता है। हिंदू देवी-देवताओं के मंदिरों में श्रद्धालुओं की भीड़ लगी रहती है। इस माह के खास दिनों पर हिंदू उपवास रखते है और पूरे महीने शुध्द शाकाहारी भोजन करते है। भगवान शिव शंकर के भक्तों द्वारा श्रावण महीने में कांवड यात्रा की जाती है। गोवा में वास्को का सुप्रसिद्ध श्री दामोदर सप्ताह और पणजी का श्री महालक्ष्मी सप्ताह सावन मास में आते है।

सावन का स्वागत करने के लिए प्रकृति अपना रंग पूरी हरियाली में बदलती है। सावन का महीना किसानों के लिए महत्वपूर्ण है। इसी महीने में कई प्रकार के अनाज, सब्जी और फल, फूल बाजार में आते है। धान, मक्का, ज्वार, बाजरा, सूरजमुखी और कई प्रकार की सब्जी आदि की बुआई सावन महीने में की जाती है। आषाढ़ महीने में होने वाली तेज बारिश के बाद श्रावण में पूरे देश में बदलाव का वातावरण दिखाई देने लगता है। बरसात और धूप की लुका छिपी शुरू हो जाती है। आसमान में इंद्रधनुष दिखाई देता है। बाँध पानी से भर जाते है और झरनों की सुंदरता में निखार आ जाता है। हर तरफ खुशहाली का माहौल रहता है। सावन महीना ग्रीष्म ऋतु और आषाढ़ महीने की तेज बारिश के बाद आने से लोगों को गर्मी और तेज बारिश से राहत देने वाला महीना है। मौसम सुहाना हो जाता है और लोग ऐसे वक्त अपने परिवार के साथ बाहर घूमने निकलते है। सावन के महीने में वायु की गुणवत्ता भी बढ़ जाती है। मौसम अनुकूल हो जाता है, जिससे सभी लोगों की कार्य क्षमता बढ़ जाती है। सावन महीने का महत्व प्राचीन समय से चला आ रहा है। पुराणों में लिखित समुद्र मंथन सावन के महीने में ही हुआ था। यह महीना भक्तिमय महीने के साथ ही नए जीवन का भी महीना है। सावन के महीने में किसान नई फसल उगाते हैं और प्रकृति भी सावन महीने में नए पेड़-पौधों को जन्म देती है। सावन का महीना मनुष्य, पशु, पक्षी सब के लिए खुशहाल मौसम लेकर आता है।

गजेश आर. एस. तळावलीकर
सहा. अभियंता(यांत्रिकी), समुद्री विभाग

युद्ध

युद्ध क्या है? – युद्ध एक लंबे समय तक चलने वाली लड़ाई है। जो सामान्यत: दो देशों के बीच झगड़ों के कारण युद्ध का रूप ले लेती है। इतिहास के पन्नों को पलट कर देखें तो हम यही पाएंगे कि सिर्फ अपनी सत्ता स्थापित करने के लिए कितने युद्ध हुए हैं। मुग़ल शासन काल, ब्रिटिश शासन काल, विश्व युद्ध, महाभारत का युद्ध आदि सब यही बताते हैं। युध्द की भयावहताएं इतनी अधिक और इतनी बड़ी हैं कि उन्हें शब्दों में वर्णित नहीं किया जा सकता है ।

युध्द खत्म हो जाएगा, नेता एक दूसरे से हाथ मिलाएंगे। लेकिन बुढ़ी माँ अपनी शहीद बेटे का इंतजार करती रहेगी। पत्नी अपने पति की प्रतीक्षा करती रहेगी और बच्चे इंतजार करेंगे अपने वीर पिता का। मैं नहीं जानता हूं कि हमारी मातृभूमि को किसने बेचा है। लेकिन मैंने देखा कि कीमत किसने चुकाई। किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए कुछ न कुछ गवाना पड़ता है। लेकिन युद्ध से होने वाले नुकसान की भरपाई होना मुश्किल होता है।

लेकिन जब – जब युद्ध का ऐलान हुआ है तब – तब मानवता को नुकसान पहुंचा है। युद्ध के कारण कई बेकसूरों की जान भी जाती है। इसके साथ ही साथ धन की भी हानि होती है। युद्ध के कारण सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक जीवन और व्यापार और उद्योगों पर बहुत प्रभाव पड़ता है।

हमें दो विश्व युध्दों को नहीं भूलना चाहिए जिसमें जन–हत्या और संपत्ति का काफी विनाश हुआ था। इन युध्दों ने हजारों को विधवा और अनाथ बना दिया था। युध्द सिर्फ नफरत लाता है और झूठ फैलाता है। इसकी वजह से हमारे बीच की मानवता मर जाती है। बदले की भावना से लोग अराजकता फैलाने लगते हैं। अगर हम इस दृष्टि से बात करें कि कोई देश लोगों पर अत्याचार करें, गुलाम बनाकर उनका शोषण करें तब उस स्थिति में कभी न कभी युद्ध जायज़ है। प्राचीन काल के समय से ही युद्ध होते आ रहे हैं। महाभारत का हम उदाहरण ले सकते हैं।

सुख - दुःखे समे कृत्वा लाभा - लाभौ जयाजयौ ।
ततो युध्याय् युज्यस्व नैवं पापमवापस्यसि स्वस्व ।।

अर्थात् सुख – दु:ख, लाभ – हानि, जय – पराजय को सामान दृष्टि से देखते हुए तैयार हो जाओ। यदि इस प्रकार के निश्चय के साथ लड़ोगे तो किसी भी प्रकार का पाप नहीं लगेगा। अंग्रेजी में भी कहा गया है कि everything is fair in love and war अर्थात प्यार और युद्ध में सब सही है।

ऐसे भी लोग हैं जो युध्द को महानता और वीरता का प्रतीक मानते हैं। जब बात अपने देश की रक्षा की आती है तो युद्ध जायज़ है। युद्धों के द्वारा ही हमें अंग्रेजी हुकूमत से छुटकारा मिला। नहीं तो हम अभी अंग्रेजों की गुलामी कर रहे होते और शायद अभी तक लगान ही भर रहे होते।

अपने देश के हित में युद्ध जीतने के लिए अगर किसी को मारना पड़े तो यह अधर्म नहीं कहलाता। लेकिन हरे क्षेत्र, जीवों, खेतों को नुकसान पहुँचाना अधर्म और अन्याय है। ऐसा कहा गया है कि युद्ध में सबल को मारना वीरता का कृत्य माना गया है लेकिन सोते हुए व्यक्ति को मारना, निर्बल की हत्या करना आदि ये सब अपराध माने जाते हैं।

विद्वानों के अनुसार जब तक पृथ्वी पर मानव है तब तक किसी न किसी रूप में युद्ध होता ही रहेगा। अभी तक के इतिहास में कोई भी ऐसा युग नहीं बचा होगा जिसमें युद्ध न हुआ हो। अतः इस तरह की स्थितियों से कैसे छुटकारा पाया जाये यह विचारणीय है।

कोई भी राष्ट्र आपसी लड़ाई–झगड़ों से समृद्ध नहीं हो सकता और न ही अपनत्व का विकास हो पाता है। कोई भी राष्ट्र साथ में रहने से सुदृढ़ बनता है न कि आपसी टकराव से। पराक्रम और शौर्य का उपयोग देश को सुदृढ़ बनाने के लिए करना चाहिए ना कि हिंसा फैलाने में।

युद्ध होने से न केवल मानवता ख़त्म होती है बल्कि प्रकृति में उपस्थित जितनी भी अवस्थाएं हैं सभी को नुकसान पहुँचता है। तो हम सभी का पहला कर्तव्य है कि जहाँ तक हो सके मानवता फैलाएं, मानवीय पूर्ण आचरण करें। वास्तव में आज के समय में लोगों को एक मानव बनने की आवश्यकता है। आपसी ख़ुशी से ही मानवता का विकास होगा और एक बेहतरीन संसार का निर्माण होगा और तब हम कह पाएंगे कि हम सभी इसी वर्ल्ड फैमिली के सदस्य हैं।

विंस्टन सैम्युअल राज
सुपुत्र– श्रीमती रोज जेबा कुमारी, वित्त विभाग

चुनौती

आज की दुनिया प्रगति पथ पर कामयाबी हासिल कर रही है और इसके लिए हम अपना मूल्यवान योगदान दे रहे हैं। हर पल हम सब यही प्रयास करते हैं कि हम कुछ कसर बाकी न छोड़े।

इसके बावजूद हमारे सामने ऐसी बहुत सारी चुनौतियाँ है जिनका हमें डटकर सामना करना है और उस पर विजय भी प्राप्त करनी है। हमें अपनी लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिए निरंतर प्रयास करना आवश्यक है।

आज की दुनिया में सबसे पहली चुनौती है, प्रकृति में बढ़ता हुआ तापमान। इस समस्या को किस प्रकार निपटाया जाए उस पर सोचना अनिवार्य है। हम सब यह संकल्प करें कि हर एक व्यक्ति ज्यादा से ज्यादा मात्रा में पेड़ लगाए ताकि भविष्य में चैन की नींद लें सकें।

आज की दुनिया में रिश्वतखोरी भी एक सबसे बडी चुनौती है। हर कोई उस पर नियंत्रण पाने का संभव प्रयास कर रहा है। हम सब की यही कोशिश होनी चाहिए कि हम अपना कार्य कठोर परिश्रम, लगन और ईमानदारी से करें ताकि हम दुनिया में खुशहाली का माहौल बनाएं रखें।

वास्तव में दुनिया में चुनौतियाँ कितनी ही क्यों न खड़ी हो, हम अपने ज्ञान के आधार पर उनका सामना कर सकते हैं। इस प्रकार सभी चुनौतियों का सामना करके दुनिया में निश्चित रूप से रोशनी डाल सकते है।

जय हिन्द।

संजय वि. चोडणकर
सहा. अभियंता (यांत्रिक) वित्त विभाग

बूढ़ी माँ

नमस्कार, आज मैं बूढ़ी माँ की कहानी गोंय पोर्ट दर्पण के माध्यम से, आपके साथ साझा करना चाहती हूँ। कहानी है एक बूढ़ी माँ की, जिसका इकलौता बेटा विदेश में बहुत बड़ी कंपनी में, अच्छे पद पर काम कर रहा था ।

उसका पति कुछ साल पहले गुजर गया था और वह एक मंदिर के पास अपने छोटे से घर में रहती थी।

अपना गुजारा करने के लिए बूढ़ी माँ मंदिर के सामने भीख मांगती थी। उस मंदिर का पुजारी उसे भीख मांगते हुए रोज देखता था। एक बार उसने उस बूढ़ी माँ से पूछा, आपका बेटा लायक है, फिर भी आप यहाँ भीख क्यों मांगती हो।

तो बूढ़ी माँ ने जवाब दिया- पुजारीजी, मेरे पति का देहांत हो गया है। मेरा पुत्र परदेश में नौकरी के लिए चला गया। जाते समय मेरे खर्चे के लिए कुछ रुपए दे गया, वे सब खर्च हो गये इसलिए मैं भीख मांग रही हूँ।

तो पुजारी ने पूछा- तेरा बेटा तुझे कुछ नहीं भेजता ?

बूढ़ी माँ बोली- मेरा बेटा हर महीने एक रंग-बिरंगी कागज भेजता है। जिसे मैं दीवार पर चिपका देती हूँ।

पुजारी ने उसके घर जाकर देखा तो घर की दीवार पर 60 बैंक ड्राफ्ट चिपकाकर रखे थे। प्रत्येक ड्राफ्ट पचास हजार रुपये का था। पढ़ी लिखी न होने के कारण वह नहीं जानती थी कि उसके पास कितनी संपत्ति है। पुजारी ने उसे ड्राफ़्ट का मूल्य बताया ।

हमारी परिस्थिति भी कभी कभी उस बुढ़ी माँ की तरह है, हमारे पास पुस्तक, ग्रंथ, पत्रिका के रूप में कितनी नायब जानकारी मौजूद होती है लेकिन हमारे पास उसे देखने या पढ़ने का समय नहीं होता और हम उस बहुमूल्य ज्ञान से जीवन भर अछूते रहते है। इसलिए हर एक को कम से कम कुछ पढ़ने की आदत डालनी चाहिए और यह रुची अपने साथ अपने बच्चों में भी बढानी चाहिए।

पद्मजा शिवनाथ गावस,
कनिष्ठ अभियंता, सिविल इंजीनियरी विभाग

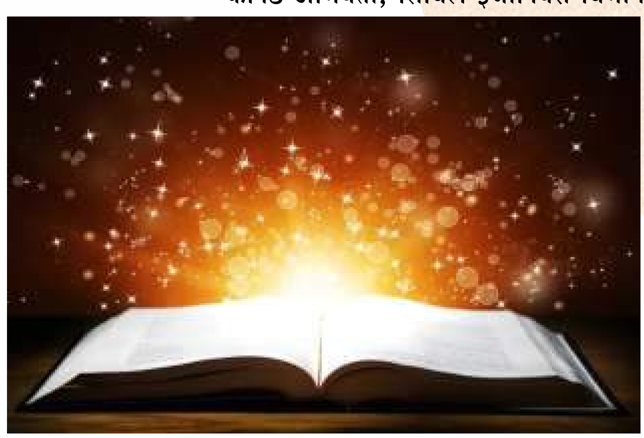

पत्तन की झलकियां

कोविड स्थिति के एक लंबे अंतराल के बाद कॉर्डेलिया क्रूज़ ने गोवा में अपना पहला डोमेस्टिक क्रूज़ सीज़न शुरू किया। क्रूज़ जहाज एमवी एम्प्रेस 1591 यात्रियों सहित दि 26/09/21 को लगभग 12.00 बजे मुरगांव पत्तन में आया।

आजादी के अमृत महोत्सव के एक भाग के रूप में मुरगांव पत्तन द्वारा अपने कर्मचारियों के लिए आयोजित आत्मरक्षा और योगाभ्यास कार्यक्रम का आयोजन।

पत्तन, पोत परिवहन एवं जलमार्ग मंत्रालय के निर्देशानुसार 'स्वच्छ भारत अभियान' के तहत दि. 02 अक्तूबर, 2021 को गांधी जयंती के उपलक्ष्य में मुरगांव पत्तन, गोवा में राष्ट्रिपता महात्मा गांधीजी की फोटो को पुष्पांजलि अर्पित कर सफाई अभियान शुरू किया गया।

आजादी के अमृत महोत्सव के एक भाग के रूप में स्वर्गीय श्री सरदार वल्लभभाई पटेल की 146वीं जयंती मनाने के लिए सीआईएसएफ ने त्रिवेंद्रम (केरल) से स्टैच्यू ऑफ यूनिटी, केवडिया (गुजरात) तक साइकिल रैली का आयोजन किया। दिनांक 11.10.2021 को साइकिल रैली गोवा में पहुंचते ही मुरगांव पत्तन ने उनका स्वागत किया और दिनांक 13.10.2021 को श्री मिलिंद नाईक, माननीय शहरी विकास मंत्री, गोवा सरकार ने उपाध्यक्ष/एमपीटी, श्री गुरुप्रसाद राय एवं अन्य विभागाध्यक्षों की उपस्थिति में झंडी दिखाकर रैली को रवाना किया।

दि. 21 अक्तूबर, 2021 को वीर पुलिसकर्मियों के बलिदानों के स्मरणार्थ मुरगांव पत्तन के सीआईएसएफयूनिट ने मुख्य अतिथि श्री. जी.पी.राय, उपाध्यक्ष, मुरगांव पत्तन की उपस्थिति में 'पुलिस स्मृति दिवस समारोह' का आयोजन किया।

मुरगांव पत्तन के कर्मचारियों ने गैर सरकारी संगठन– 'अन्याय रहित जिंदगी, वास्को' के समन्वय से पत्तन क्षेत्रों में और आसपास के विभिन्न स्थानों पर स्वच्छ भारत अभियान चलाया ।

अधीनस्थ विधान समिति, राज्य सभा का दिनांक 29.10.2021 से 30.10.2021 तक ताज आग्वाद , गोवा में अध्ययन दौरा ।

मुरगांव पत्तन में सतर्कता जागरूकता सप्ताह– 2021 का आयोजन

1. मुरगांव पत्तन ने दिनांक 26 अक्टूबर से 1 नवंबर, 2021 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया, जिसका विषय था स्वतंत्र भारत 75: सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता।
2. दिनांक 26 अक्टूबर, 2021 को आयोजित सतर्कता जागरूकता सप्ताह के उद्घाटन समारोह का यूट्यूब पर सीधा प्रसारण किया गया। अध्यक्ष, श्री राजीव जलोटा, आईएएस, ने संगठन के लिए और उपाध्यक्ष श्री गुरुप्रसाद राय ने सभी उपस्थित लोगों के साथ–साथ कार्यक्रम में वर्च्युअल रुप से शामिल नागरिकों को सत्यनिष्ठा की शपथ दिलाई।
3. सार्वजनिक जीवन में सत्यनिष्ठा के महत्व पर कर्मचारियों को जागरूक करने के लिए, पत्तन में प्रमुख स्थानों पर सतर्कता जागरूकता सप्ताह – 2021 की थीम के साथ बैनर लगाए गए। पत्तन कर्मचारियों के लिए विभागीय पोस्टर प्रतियोगिता, निबंध लेखन प्रतियोगिता और 'पत्तन में सुव्यवस्थित सुधार के लिए सुझाव' आमंत्रित करते हुए प्रतियोगिता जैसी गतिविधियों का आयोजन किया गया।
4. श्री बी. बी. रॉय, निदेशक, केंद्रीय सतर्कता आयोग ने भी पत्तन का दौरा किया और पत्तन अधिकारियों को निवारक सतर्कता और पीआईडीपीआई प्रक्रियाओं के विभिन्न पहलुओं से अवगत कराया।
5. सतर्कता जागरूकता सप्ताह–2021 का समापन समारोह दिनांक 1 नवंबर, 2021 को आयोजित किया गया। समारोह की अध्यक्षता श्री गुरुप्रसाद राय, उपाध्यक्ष ने की और समारोह का नेतृत्व पत्तन के मुख्य सतर्कता अधिकारी, श्री विजय दत कागित, आईओएफएस ने किया।
6. पुरस्कार वितरण के साथ समारोह का समापन हुआ।

मुरगांव पत्तन द्वारा दि. 1 नवंबर 2021 से 15 नवंबर, 2021 तक स्वच्छता पखवाड़ा– 2021 भी मनाया गया। पत्तन क्षेत्र और उसके आसपास के परिसर में चलाए गए इस अभियान में पत्तन के सभी विभागों ने भाग लिया।

आज़ादी के अमृत महोत्सव के एक भाग के रूप में, मुरगांव पत्तन ने नवंबर 2021 माह में पत्तन कर्मचारियों के लिए ‘व्यक्तित्व विकास’ और ‘तनाव प्रबंधन’ पर प्रशिक्षण सत्र आयोजित किए। सुश्री भाग्यश्री नाईक, जेसीआई पशिक्षक और डॉ मंजू खांडेपारकर, उप सीएमओ इसके संकाय सदस्य थे।

कर्मचारियों के बीच संवैधानिक मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए मुरगांव पत्तन में दिनांक 26.11.2021 को संविधान दिवस मनाया गया। श्री जी.पी राय, उपाध्यक्ष ने सभी विभागाध्यक्षों और वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में संविधान की प्रस्तावना को पढा।

नेत्र जांच शिविर का आयोजन

आज़ादी के अमृत महोत्सव के एक भाग के रूप में, मुरगांव पत्तन ने दिनांक 26.11.2021 को पत्तन क्षेत्र और उसके आसपास के क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के लिए ‘नेत्र जांच शिविर’ का आयोजन किया।

महापरिनिर्वाण दिवस

दिनांक 6 दिसंबर को भारतीय संविधान के मुख्य वास्तुकार डॉ. बी. आर. आंबेडकर की पुण्यतिथि मनायी जाती है ताकि समाज के लिए किए गए उनके अथाह योगदान और उनकी उपलब्धियों को याद किया जा सके। इस दिवस के उपलक्ष्य में श्री. पी. राय, उपाध्यक्ष, मुरगांव पत्तन ने डॉ बी.आर.आंबेडकर को उनकी 65वीं पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि दी।

महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के निर्देशानुसार दि. 9 दिसंबर, 2021 को सुबह 10:00 बजे से 11.30 बजे तक मुरगांव पत्तन एचआरडी सेंटर में कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न (रोकथाम, निषेध और निवारण) अधिनियम, 2013 इस ऐतिहासिक कानून की अधिसूचना की आठवीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में, अधिनियम के प्रावधानों का अनुपालन सुनिश्चित करने तथा कर्मचारियों को यौन उत्पीड़न के विरूद्ध एक सुरक्षित कार्य वातावरण के अधिकार के प्रति जागरूक बनाने के उद्देश्य से एक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। एडवोकेट सुरेश राव, सीनियर एडवोकेट, वास्को उक्त जागरूकता कार्यक्रम के लिए संकाय सदस्य थे।

माननीय केंद्रीय मंत्री, पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय श्री सर्बानंद सोणोवाल जी तथा
माननीय केंद्रीय राज्य मंत्री श्री श्रीपाद नाईक जी द्वारा दि. 11 दिसंबर 2021 को मुरगांव पत्तन का दौरा

मुरगांव पत्तन में गणतंत्र दिवस समारोह 2022 का आयोजन

आज़ादी का अमृत महोत्सव के एक भाग के रूप में, मुरगांव पत्तन प्राधिकरण द्वारा दिनांक 01.02.2022 को स्वतंत्रता सेनानियों को सम्मानित किया गया।

आज़ादी का अमृत महोत्सव के भाग के रूप में दिनांक 07.03.2022 को एमपीए के अध्यक्ष, श्री राजीव जलोटा और साथ ही उपाध्यक्ष और विभागाध्यक्षों ने प्रधानमंत्री गति शक्ति योजना के सिद्धांतों पर प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया तथा स्टैकहॉल्डरों के साथ बातचीत की। इसमें 16 केंद्रीय मंत्रालयों के अधिकारियों ने भी वर्चुअल रूप से भाग लिया।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण द्वारा दिनांक 08.03.2022 को महिलाओं के समग्र स्वास्थ्य और कल्याण पर ध्यान केंद्रित करते हुए और आजादी का अमृत महोत्सव के एक भाग के रूप में वर्चुअल रूप से विभिन्न जागरूकता सत्रों का आयोजन कर अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। इस अवसर पर पूर्व अध्यक्ष/एमपीए की पत्नी श्रीमती रूपाली जलोटा ने वर्चुअली उपस्थित रहकर कार्यक्रम की शोभा बढायी।

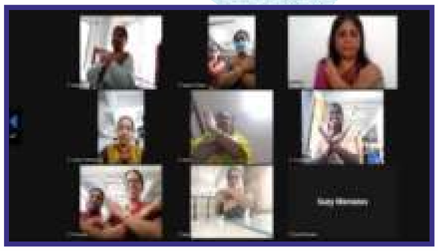
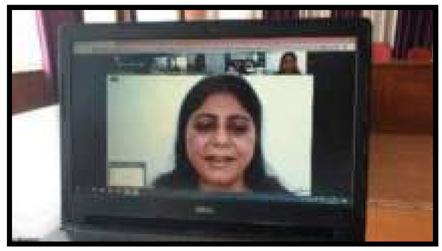

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण ने दिनांक 22.03.2022 को फिईओ एक्सपोर्ट कॉन्क्लेव में भाग लिया और गोवा के व्यापार और उद्योग के लिए उपलब्ध मौजूदा सुविधाओं और नियोजित अवसंरचनाओं का प्रदर्शन किया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन गोवा के माननीय राज्यपाल, महामहिम श्री पी.एस. श्रीधरन पिल्लई द्वारा किया गया।

सागरमाला के 7 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में गतिविधियां (30.02.2022 – 01.04.2022)

सामाजिक संपर्क कार्यक्रम–सागरमाला के 7 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में, मुरगांव पत्तन ने दिनांक 30.03.2022 को स्कूली बच्चों के लिए पोर्ट विजिट के साथ–साथ पत्तन की पूर्ण और आगामी परियोजनाओं संबंधी जानकारी प्रस्तुत की।

स्टेकहोल्डर्स मीट– इसी क्रम में दिनांक 31.03.2022 को स्टेकहोल्डर्स मीट का आयोजन किया जिसमें सागरमाला के तहत शामिल परियोजनाओं संबंधी पीपीटी और वीडियो प्रस्तुत किए गए और साथ ही श्री जी.पी. राय, उपाध्यक्ष/एमपीए ने स्टेकहोल्डरों से बातचीत की।

मीडिया इंटरेक्शन और ब्रीफिंग– इसी क्रम में दिनांक 01.04.2022 को मीडिया इंटरेक्शन और ब्रीफिंग का आयोजन किया गया जिसमें सागरमाला के तहत शामिल परियोजनाओं संबंधी पीपीटी और वीडियो प्रस्तुत किए गए और साथ ही श्री जी.पी. राय, उपाध्यक्ष/एमपीए ने मीडिया से बातचीत की।

राष्ट्रीय समुद्री दिवस समारोह – 05.04.2022

दिनांक 5 अप्रैल 2022 को मुरगांव पत्तन, गोवा में 59वां राष्ट्रीय समुद्री दिवस मनाया गया, जिसका विषय था, प्रोपेलिंग इंडियन मरीटाईम टू नेट जीरो। रवींद्र भवन, वास्को में आयोजित मुख्य समारोह की अध्यक्षता कप्तान मनोज जोशी, उप. संरक्षक/एमपीए ने की। राष्ट्रीय समुद्री दिवस के भाग के रूप में, मास्टर मेरिनर्स और मुख्य अभियंताओं के बीच दिनांक 03.04.2022 को आईएमएस ग्राउंड, वास्को में क्रिकेट मैच का आयोजन किया गया था।

एमपीए प्रशासनिक बिल्डिंग में पोर्ट सुविधा सुरक्षा सलाहकार समिति (पीएफएसएसी) की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता पूर्व अध्यक्ष एमपीए, श्री राजीव जलोटा आईएएस ने की। कैप्टन मनोज जोशी, उप संरक्षक और पत्तन सुविधा सुरक्षा अधिकारी ने सभी स्टेकहोल्डरों का स्वागत किया। इस दौरान सुरक्षा मामलों पर चर्चा हुई।

जलमार्ग सम्मेलन 2022 – 12.04.2022

मुरगांव पत्तन, गोवा ने डिब्रूगढ़, असम में आयोजित जलमार्ग सम्मेलन 2022 की लाइव स्ट्रीमिंग के लिए एमपीए बोर्ड रूम में विशेष व्यवस्था की थी जिसमें स्टैकधारकों के साथ बड़ी संख्या में कर्मचारियों ने भी वर्चुअल रूप से भाग लिया।

डॉ. बी. आर. आंबेडकर की 131 वीं जन्म वर्षगांठ – 14.04.2022

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण, गोवा ने दिनांक 14.04.2022 को भारतीय संविधान के मुख्य शिल्पकार, भारत रत्न, डॉ. बी. आर. आंबेडकर को उनकी 131 वीं जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की। श्री मनोज जोशी, उप. संरक्षक व आंबेडकर वोकेशनल सेंटर (एवीसी) के अध्यक्ष ने इस अवसर पर डॉ. बी. आर. आंबेडकर की महत्ता पर जोर देते हुए उनके द्वारा किए गए महान योगदान पर प्रकाश डाला।

योग का अंतर्राष्ट्रीय दिवस 2022, काउंटडाउन का 64 वां दिन – 18.04.2022

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस, 2022 के काउंटडाउन के 64वें दिन के रूप में तथा पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय के निर्देशानुसार, मुरगांव पत्तन प्राधिकरण ने दिनांक 18.04.2022 को ''योग– ए की टू गुड हेल्थ'' पर एक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया, जिसके पश्चात योग विशेषज्ञ डॉ रेशमा बाळे, एमओ/एमपीए ने योग सत्र के माध्यम से मार्गदर्शन किया।

अग्नि सुरक्षा सप्ताह – 14.04.2022 से 20.04.2022

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण द्वारा दिनांक 14.04.2022 से 20.04.2022 तक अग्नि सुरक्षा सप्ताह मनाया गया। यह उन बहादुर सेनानियों को श्रद्धांजलि देने के लिए मनाया जाता है, जिन्होंने दिनांक 14.04.1944 को अपने कर्तव्य के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। अग्निशमन विभाग के कर्मियों द्वारा पत्तन कर्मचारियों को इस संबंध में जागरुकता हेतु व्याख्यान दिए गए और प्रदर्शन किए गए ।

आजादी का अमृत महोत्सव–आइकॉनिक वीक (30.04.2022 – 05.05.2022)

सीएसएल कार्यक्रमों की लाइव स्ट्रीमिंग – एमपीए ने दिनांक 30.04.2022 को आइकॉनिक वीक – आजादी का अमृत महोत्सव के सीएसएल कार्यक्रमों की लाइव स्ट्रीमिंग की व्यवस्था की और इस अवसर पर श्री गुरुप्रसाद राय, उपाध्यक्ष/ एमपीए, विभागाध्यक्ष और वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

पत्तन विकास के 75 वर्ष पर प्रदर्शनी – एमपीए ने दिनांक 02.05.2022 को पत्तन विकास के 75 वर्ष पर प्रदर्शनी का आयोजन किया। श्री गुरुप्रसाद राय, उपाध्यक्ष / एमपीए, ने इसका उद्घाटन किया और इस अवसर पर विभागाध्यक्ष, अधिकारी, कर्मचारी और स्कूली छात्र भी उपस्थित थे।

योग सत्र और प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता – एमपीए ने दिनांक 04.05.2022 को योग सत्र और स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया। इसमें पत्तन के कर्मचारियों और उनके परिवार के सदस्यों और सीआईएसएफ कर्मियों ने भाग लिया।

स्थानीय स्कूल / कॉलेज के छात्रों के लिए पोर्ट विजिट – मुरगांव पत्तन, गोवा ने आजादी का अमृत महोत्सव– आइकॉनिक सप्ताह के एक भाग के रूप में दिनांक 05.05.2022 को पत्तन क्षेत्र में और आसपास के स्थानीय स्कूली छात्रों के लिए पोर्ट विजिट का आयोजन किया। पत्तन विकास पर लघु वीडियो भी प्रसारित किए गए।

डॉ संजीव रंजन, आईएएस, सचिव, पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय ने मुरगांव पत्तन, गोवा का दौरा किया । उन्होंने पत्तन प्रचालन क्षेत्रों का दौरा किया और बोर्ड कक्ष में उपाध्यक्ष, विभागाध्यक्ष और पत्तन के अन्य अधिकारियों के साथ चर्चा भी की।

श्री बार्ट डी जोंग, मुंबई में नीदरलैंड राज्यों के महावाणिज्य दूतावास और श्री कुणाल वोरा, जूनियर ट्रेड एंड इनवेस्टमेंट ऑफिसर ने दिनांक 24.05.2022 को एमपीए का दौरा किया । बैठक के दौरान उपाध्यक्ष और विभागाध्यक्षों की उपस्थिति में यातायात प्रबंधक ने पत्तन द्वारा संभलाए जानेवाले विभिन्न नौभार और आगामी परियोजनाओं के बारे में जानकारी दी।

पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग राज्य मंत्री श्री श्रीपाद नाईक और श्री रोहन खंवटे, राजस्व, सूचना और प्रौद्योगिकी, श्रम और रोजगार मंत्री, गोवा सरकार ने दिनांक 26.05.2022 को मुरगांव पत्तन प्राधिकरण का दौरा किया। उन्होंने ब्रेकवाटर घाट का दौरा किया और आगामी अंतर्राष्ट्रीय क्रूज टर्मिनल परियोजना के बारे में चर्चा की।

डॉ.आर. के.इलैनगोवन, महानिदेशक और मुख्य श्रम निरीक्षक (डॉक सुरक्षा) ने दिनांक 25.05.2022 और 26.05.2022 को पत्तन में गोदी सुरक्षा की समीक्षा करने के लिए मुरगांव पत्तन प्राधिकरण का दौरा किया। उन्होंने अनुपालन के लिए सभी एमएएच स्थापना का निरीक्षण किया और सुरक्षा मामलों की समीक्षा की।

डॉ. वेंकट रमणा अक्कराजु, अध्यक्ष, एनएमपीए ने दिनांक 03.06.2022 को मुरगांव पत्तन प्राधिकरण के अध्यक्ष रूप में अतिरिक्त कार्यभार संभाला। उन्होंने उपाध्यक्ष, श्री गुरुप्रसाद राय एवं विभागाध्यक्षों से चर्चा की और साथ ही पत्तन यूनियन, ऑफिसर्स एसोसिएशन, अ.जा./अ.ज. जा. और अ.पि.व. एसोसिएशन के प्रतिनिधियों, पत्तन प्रयोक्ता और स्टेकहोल्डर्स से भी मुलाकात की।

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण ने सीआईएसएफ जवानों के समन्वय में दिनांक 05.06.2022 को पौधे लगाकर 'विश्व पर्यावरण दिवस' मनाया।

योग का अंतर्राष्ट्रीय दिवस 2022– काउंटडाउन का 9 वां दिन

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस, 2022 के काउंटडाउन के 9 वें दिन के रूप में, एमपीए ने योग विशेषज्ञ श्री राधाकृष्णन नायर के मार्गदर्शन में योग जागरूकता कार्यक्रम और योग प्रदर्शन आयोजित किया जिसमें उपाध्यक्ष, विभागाध्यक्ष, पत्तन कर्मचारी और उनके परिवार सदस्य और सीआईएसएफ कर्मियों ने भाग लिया।

आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार ने माननीय पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग राज्य मंत्री, श्री श्रीपाद नाईक के नेतृत्व में दिनांक 21.06.2022 को ओल्ड गोवा में ''अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस'' का कार्यक्रम आयोजित किया। बड़े पैमाने पर भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए एमपीए के लगभग 100 पत्तन पदाधिकारियों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष में एमपीए, गोवा ने भी दिनांक 21.06.2022 को योग प्रशिक्षक श्रीमती फरहत जहांन के मार्गदर्शन में दीपविहार हाईस्कूल में योग सत्र आयोजित किए। उपाध्यक्ष, विभागाध्यक्ष, पत्तन पदाधिकारी और उनके आश्रित, सीआईएसएफ कर्मी, स्कूली बच्चे इसमें शामिल हुए।

आजादी के अमृत महोत्सव के भाग के रूप में ध्वजारोहण समारोह - 20.07.2022

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण ने दिनांक 20.0.2022 को ध्वजारोहण समारोह मनाया। माननीय राज्यपाल, महामहिम श्री श्रीधरन पिळ्ळई मुख्य अतिथि थे। माननीय राज्यपाल ने एमपीए के अध्यक्ष, डॉ. वी. रमणा अक्कराजु और उपाध्यक्ष श्री गुरुप्रसाद राय की उपस्थिति में राष्ट्रीय ध्वज फहराया। इस अवसर पर सेवानिवृत्त कर्मचारियों, सीआईएसएफ अधिकारियों और साथ ही हितधारकों और छात्रों को भी सम्मानित किया गया।

स्वच्छ सागर सुरक्षित सागर के एक भाग के रूप में, मुरगांव पत्तन ने दि. 05.08.2022 को वेलसांव समुद्रतट, गोवा में तटीय सफाई अभियान और जागरूकता अभियान का आयोजन किया।

मुरगांव पत्तन में भारत सरकार के निर्देशानुसार आज़ादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में कर्मचारियों, सीआईएसएफ कर्मियों और स्कूल/कॉलेज के छात्रों को राष्ट्रीय ध्वज वितरित कर ''हर घर तिरंगा'' अभियान चलाया। इस दौरान स्कूल/कॉलेज के छात्रों द्वारा रैली का आयोजन भी किया गया।

आज़ादी की 75 वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में दि 15 अगस्त, 2022 को मुरगांव पत्तन में स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन

मुरगांव पत्तन में
हिंदी कार्यशालाओं
का आयोजन

हिंदी अनुभाग व्दारा
विभागों की
हिंदी कार्य समीक्षा